॥ श्री ॥

चिदानंदजी महाराज कृत

॥ स्वरोदय ज्ञान ॥

पद्य तथा गद्य बद्ध

छपावी प्रसिद्ध करनार,

श्रा० भीमसिंह माणेक

मांडवी नं० २ मुंबइ.

संवत् १९७० सने १९१४.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge,
at the Nirnaya-sagar Press,
23, Kolbhat Lane Bombay.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck,
225-231, Mandvi, Sackgalli, Bombay.

प्रस्तावना

जगतमां कुदरते मनुष्यजातिने विशेष ज्ञान आपेलुं छे, तेना परिणाममां उत्तम मनुष्यो भूत, भविष्य अने वर्त्तमान काळनी वात हस्तामलकवत् जाणी शके छे. आ वात सर्वत्र जगजाहेर छे.

ज्योतिष, रमळ विगेरे ज्ञानो काळज्ञानना उपयोगमां आवी शके छे, परंतु तेना करतां पण सरळ एक रीत छे ते ए के "स्वरोदय" माणसमात्रथी विना साधने जाणी श-

काय तेम छे. आ ज्ञान पूर्वना योगी-श्वरोए शोधन करी सिद्ध करेल छे. मात्र मनुष्य पोताना प्रमादे करी अजाण रही अंधनी माफक जम्या करे छे. स्वरोदयनो स्पष्ट अर्थ ए छे के " पवननुं प्रगटवापणुं." शरीरमां पांच जातिना पवन छे, तेने नीकल-वाना बे रस्ता छे अने ते केवी रीते नीकले छे, कया कया समये, कइ कइ रीते अने कये स्थलेथी नीकले तो शुं शुं थाय, तेनुं जे ज्ञान थवुं तेनुं नाम स्वरोदय छे. स्थिर चित्तथी एकाग्र बेसी शुभ भावना संयुक्त पोताना

सद्गुरु देवनुं स्मरण करी स्वर जोवो; पछी आ पुस्तकमां बताव्या प्रमाणे न्यायमार्ग प्रमाणे कार्यो करवाथी ते सिद्ध थशे.

आ ज्ञाननो उपयोग निंदित कार्योमां करवाथी घणुं अनिष्ट परिणाम आवे छे ए खास लक्षमां राखवा अमारी भलामण छे.

भाद्रपद वदि ८
संवत् १९७०
सने १९१४

श्रावक भीमसिंह
माणेकना
कार्यप्रवर्तको.

जाहेरखबर

आप बोधदायक रसिक कथाओ-वाळुं, देवतत्त्व, गुरुतत्त्व, धर्मतत्त्व, ज्ञानतत्त्व, नीति, न्याय, विवेकादि बीजा घणा विषयोथी नरपूर अने विस्तारित शुरू सरल नाषानुं जैन साहित्यनुं एवुं कयुं पुस्तक वांचशो ?

" सूक्तमुक्तावली "

के जेमां उपर लख्या प्रमाणे तमाम विषयो आवेला छे अने घणी बोध-दायक रासक कथाओ पण छे.

किमत रू० २—०—०

वैराग्यकल्पलता पूर्वार्ध

आ ग्रंथ अति रसिक, वैराग्यरसथी भरपूर, संसारस्वरूपने बतावनारो तथा काव्योना चमत्कारोथी भरेलो छे तेमज जैनना साहित्यथी भरपूर करेलो बोधदायक उत्तमोत्तम कथाओ साथे जैन दर्शननां तत्वो देखाडनारो उत्तमोत्तम ग्रंथ छे.

आ ग्रंथ मुनिमहाराजोने व्याख्यानमां अति उपयोगी होवाथी पानां आकारे छपाव्यो छे.

किमत रू० ३-०-०

पाडवचरित्र

आ ग्रंथनुं शुद्ध सरल गुजराती भाषांतर प्रसंगोपात आशरे १०० रंगीन मनोहर चित्रो सहित बहार पड्युं छे.

तेमां श्री नेमीश्वर भगवान्, बलभद्र, वासुदेव जे श्रीकृष्ण, प्रतिविष्णु जे जरासंध, पांडव, कौरव, भीष्मपितामह, कर्ण, द्रोणाचार्य अने कृपाचार्यादिक अनेक वीर पुरुषोनां चरित्रो छे. तेउनी कथारूप अमृतनी धारानुं पान करतां कोइ पण मनुष्यने तृप्ति थाय नहीं,

कारण के ते ग्रंथ एटलो तो रसिक छे के वारंवार वांचवा मन थाय छे. किमत रू० ५—०—०

श्री सम्यक्त्व मूल बार व्रतनी टीप.

आ ग्रंथ दरेक मुनिमहाराज तथा श्रावकने अवश्य मनन करवो जोइए के जेमां साधु अने श्रावकना धर्मना सर्व मली एकसो चोवीश अतिचारोनुं विस्तारथी शुरू अने सरल भाषामां रहस्य समजाव्युं छे. किमत रू० १—४—०

॥ श्री ॥

कल्पसूत्र सुबोधिकानुं भाषातर.

पानां आकारे. सुधारा वधारा साथे, ५८ चित्रो सहित, पर्युषण पर्वमां सर्व कोइ वांची समजी शके एवुं शासन प्रभाविक सूत्र.

आवृत्ति चोथी. किमत रू० १-८-०

॥ श्री ॥

॥ जंबूस्वामी चरित्र ॥

उर्फे

परिशिष्ट पर्वना प्रथमना
चार सर्गनुं भाषांतर.

आ ग्रंथमां दृष्टांतरूपे कहेली अत्यंत रसिक ने बोधदायक २६ कथाउ साथे श्री जंबूस्वामीनुं चरित्र आवे छे.

जंबूस्वामीए अगणित द्रव्य अने तुर्तनी परणेली आठ स्त्रीउ तजी तेनो अद्भुत चितार आप्यो छे.

पाकी बाइन्डींग छतां

किमत रू. ०—ए—०

॥ श्री ॥

पद्मविजयजी महाराज कृत

॥ समरादित्य केवलीनो रास ॥

जेमां श्री समरादित्यना तमाम

भवनुं वैराग्यथी भरपूर वर्णन करवामां आव्युं छे.

वैराग्य माटे ग्रंथ वांचवो होय तो आज ग्रंथ वांचो. कि. रू० ३—८—०

जैनधर्मसिंधु.

ए नामनो अति उत्तम ग्रंथ छपाइ तैयार छे, जेना आठ परिच्छेद करवामां आव्या छे. १ प्रथम परिच्छेदमां सर्व गच्छनां प्रतिक्रमण छे. २ बीजा परिच्छेदमां घणां चैत्यवंदनो तथा घणी थुइयो तथा सर्व जातनी तपस्या करवानी विधि दाखल करेल

छे. ३ त्रीजा परिछेदमां श्रावकदिन-
चर्या—दिनकृत्य—रात्रिकृत्य—मासकृ-
त्य—वर्षकृत्य अने जन्मकृत्य वि-
गेरेनी हकीकत छे. ४ चोथा परि-
छेदमां नाना मोटा प्राचीन कविउनां
करेलां एकसो स्तवन आशरे छे.
५ पांचमा परिछेदमां जूना कविउनी
करेल सजायो एकसो आशरे छे.
६ छठा परिछेदमां सर्व स्तोत्रनो स-
मावेश करवामां आवेल छे.७ सातमा
परिछेदमां साधुसाध्वीना आचार-
विचार तथा तेमनां प्रतिक्रमण,
पक्खीसूत्र विगेरे दाखल करेल छे.

८ आठमा परिछेदमां सोल संस्कार जन्मथी ते मरण पर्यंतना सोल संस्कार छे.

पुस्तक डेमी आठ पेजी छे, पृष्ठसंख्या ८८८ छे, सुंदर पाका बाइंडींगथी बांधेल छे, किमत रू० ३—०—०

श्री "जैन कुमारसंभव" महाकाव्य. (कर्ता जयशेखरसूरि) पानां आकारे. आ नामनुं अति अद्भुत तथा काव्यचमत्कृतिवालुं अने साहित्यना सारथी भरेलुं रमणिक काव्य अमोए तेना गुजराती अर्थ सहित छपावी प्रसिद्ध कीधुं छे. आ ग्रंथ-

नां काव्यनी रचना एटली तो मधुर अने विद्वत्ता जरेली बे के ते वांचवाथी दरेक विद्वानोनां मनने आश्चर्य थया विना रहेतुं नथी. आ काव्यमां श्रीरुषजदेव प्रजुनुं जरत कुमारना जन्म पर्यंत वर्णन आपेलुं बे अने तेम करीने आ काव्यनुं नाम "जैन कुमारसंजव" एवुं नाम सफल कर्युं बे. वली आज दिन सुधीमां जैनजाइउने तथा मुनिराजो आदिकने संस्कृत जाषानुं व्याकरण जणी अन्य दर्शनीउनां जे काव्यो जणवानी जरुर पमती हती ते अमोए

गुजराती अर्थ साथे छपावी प्रसिद्ध करेला आ काव्यग्रंथथी दूर थइ छे. वली आ ग्रंथ बीजा काव्यग्रंथो करतां कवित्वशक्तिमां चढीयातो होवाथी जैनबंधुओने उपयोगी छे. किमत रु०१-१२-०

उपरनां तमाम पुस्तको नीचेने ठेकाणेथी मलशे.

श्रावक भीमसिंह माणेक.

जैन पुस्तको प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार; शाकगली, मांडवी, मुंबइ.

॥ श्रीसच्चिदानंदाय नमः ॥

अथ श्रीचिदानंदजी अपर नाम श्रीकपूरचंदजी महाराज कृत

॥ स्वरोदयज्ञान प्रारंभः ॥

॥ छप्पय छंद ॥

॥ नमो आदि अरिहंत, देव देवनपति राया ॥ जास चरण अवलंब, गणाधिप गुण निज पाया ॥ धनुष पंचशत मान, सप्त कर परि-

मित काया॥ वृषभ आदि अरु अंत, मृगाधिप चरण सुहाया ॥ आदि अंत युत मध्य, जिन चोवीश इम ध्याइये ॥ चिदानंद तस ध्यानथी, अविचल लीला पाइये॥ १ ॥ इक कर वीणा धरत, इक कर पुस्तक गा-जे॥ चंदवदन सुकुमाल, भाल जस तिलक विराजे ॥ हार मुकुट केयूर, चरण नूपुरधुनि वाजे ॥ अद्भुत रूप सरूप, निरख मन रंभा लाजे ॥ ली-लायमान गजगमनी नित, ब्रह्मसुता चित्त ध्याइये ॥ चिदानंद तस ध्या-नथी अविचल लीला पाइये ॥२॥

॥ दोहा ॥

॥ उदधिसुता सुत तास रिपु, वा-
हन संस्थित बाल ॥ बाल जाणी नि-
ज दीजीए, वचन विलास रसाल ॥
॥ ३ ॥ अज अविनाशी अकल जे,
निरंकार निरधार ॥ निर्मम निर्नय
जे सदा, तास नक्ति चित्त धार ॥ ४ ॥
जन्म जरा जाकुं नहीं, नहीं सोग
संताप ॥ सादि अनंती थिति करी,
थिति बंधन रुचि काप ॥ ५ ॥ तीजे
अंशरहित शुचि, चरम पिंम अव-
गाह ॥ एक समे समश्रेणिए, अचल
थयो शिवनाह ॥ ६ ॥ सम अरु विषम-

पणे करी, गुण पर्याय अनंत ॥ एक एक परदेशमें, शक्ति सुजग महंत ॥७॥ रूपातीत व्यतीतमल, पूर्णानंदी ईस ॥ चिदानंद ताकुं नमत, विनय सहित निज सीस ॥ ८ ॥ काल-ज्ञानादिक थकी, लही आगम अ-नुमान ॥ गुरु किरपा करी कहत हूं, शुचि स्वरोदयज्ञान ॥ ९ ॥ स्वरका उदय पिछाणीए, अतिही थिर चि-त्त धार ॥ ताथी शुभाशुभ कीजीए, भावी वस्तु विचार ॥ १० ॥ नाडी तो तनमें घणी, पण चोवीश प्रधान॥ तिनमें नव फुनि ताहुमें, तीन अ-

धिक कर जान ॥ ११ ॥ इंगला पिं-
गला सुखमना, ये तीनूंके नाम ॥
भिन्न भिन्न अब कहत हूं, ताके
गुण अरु धाम ॥ १२ ॥ भृकुटी चक्रशुं
होत है, स्वासाको परकास ॥ वंक-
नालके ढिग थइ, नाडी करत नि-
वास ॥ १३ ॥ नाडीतें फुनि संचरत,
इंगला पिंगला धाम ॥ दक्षण दिश
हें पिंगला, इंगला नाडी वाम ॥१४॥
इण दोउंके मध्यमें, सुखमन नाडी
जोय ॥ सुखमनके परकासमें, स्वर
फुनि चालत दोय ॥ १५ ॥ डाबा
स्वर जब चलत हें, चंद उदय तब

जान ॥ जब स्वर चालत जीमणो, उदय होत तब जान ॥ १६ ॥ सौम्य काजकूं शुभ शशि, क्रूर कामकूं सूर ॥ इणिविधि लख कारज करत, पामे सुख जरपूर ॥ १७ ॥ दोउं स्वर सम संचरे, तब सुखमन पहिचांन ॥ तामें कोउं कारज करत, अवस होय कबू हांन ॥ १८ ॥ चंद्र चलत कीजे सदा, थिर कारज स्वर जाल ॥ चर कारज सूरज चलत, सिद्ध होय ततकाल ॥ १९ ॥ कृष्णपक्ष स्वामी रवि, शुक्लपक्ष पति चंद ॥ तिथि-जाग इनका लही, कारज करत

आनंद ॥ २० ॥ कृष्णपक्षकी तीन तिथि, प्रथम रविकी जांन ॥ तीन शशिकी फुनि रवि, इण अनुक्रम पहिचांन ॥ २१ ॥ शुक्लपक्षकी तीन तिथि, चंद तणी कही मीत ॥ फुन रवि फुन शशि फुन रवि, शशि गिणवाकी रीत ॥ २२ ॥

॥ छप्पय छंद ॥

॥ मंगल शनि आदित्य, वार स्वामी रवि जाणो ॥ सुरगुरु बुध अरु सोम, शुक्र पति चंद वखाणो ॥ इणविधि स्वर तिथि वार, जिन्न कर नक्षत्र पिछाणो॥ शुभ कारिजकूं योग्य,

सकल इणविधि मन आणो ॥ निरगम सुरगम विध, ज्ञाव इणविधकें लखो ॥ तत्त्व तणो परकाश, सुधारस इम चखो ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्णपक्ष एकम दिने, प्रातः सूर जो होय ॥ तौ ते पक्ष प्रवीण नर, आनंदकारी जोय ॥ २४ ॥ शुक्लपक्षके आदि दिन, जो शशि स्वर उद्योत ॥ तो ते पक्ष विचारीए, सुखदायक अति होत ॥ २५ ॥ चंद्रतिथिमें चंद्र स्वर, सूरतिथि वहे सूर ॥ कायामें पुष्टि करे, सुख आ-

पत नरपूर ॥२६॥ चंद्रतिथिमें आय
जो, नानु करत प्रकाश ॥ तो कलेश
पीका हुवे, किंचित वित्त विनाश
॥ २७ ॥ सूरजतिथि पमिवा दिने,
चले चंद्र स्वर जोर ॥ पीक कलह नृप
नय करे, चित्त चंचल चिहुं उंर॥२८॥
दोउं पक्ष पमिवा दिने, सुखमन स्वर
जो होय ॥ लान हाण सामान्यथी,
ते निहच्चे करी जोय ॥२९॥ वृश्चिक
सिंह वृष कुंन पुन, शशि स्वरनी
ए राश ॥ चंद्रोजोग इणके मिलत,
शुन कारज परकाश ॥ ३० ॥ कर्क
मकर तुल मेष पुन, चर... ।शि ए

चार ॥ रवि संग ए संचरत, चर काजे सुखकार ॥ ३१ ॥ मीन मिथुन धन कन्यका, द्विस्वभाव ए जान ॥ सुख-मन स्वरसुं मिलत है, काज करत होय हान ॥ ३२ ॥ ससि सूरजके मास इम, भिन्न भिन्न करीए जाण ॥ राशि वर्णित दिन थकी, अधिक भेद मन आण ॥३३॥ प्रश्न करणकूं कोउ नर, आवत हिरदे धार ॥ पृछक नरनी दिशि तणो, निर्णय कहुं वि-चार ॥ ३४ ॥ सनमुख भावी ऊर्ध्व दिशि, रही प्रश्न करे कोय ॥ चंद्र-जोग है ता समे, तो कारिज सिद्धि

होय ॥ ३५ ॥ नीचे पीछे जीमणो, जो कोइ पूछे आय ॥ भानुजोग स्वर होय तो,तस कारज हो जाय॥३६॥ पूछे दक्षिण भुज रही, सूरज स्वरमें वात ॥ लगन वार तिथि जोग मिली, सिद्ध कार्य अवदात ॥ ३७ ॥ वाम भाग रही जो कहे,प्रश्न तणो परसंग ॥ शशि स्वर जो पूरण हुवे, तो तस काज अभंग ॥ ३८ ॥ पूछे दक्षण कर रही, शशि स्वरमें जो कोय ॥ रवि तत्त्व तिथ वार बिन, तस कारज नवि होय ॥ ३९ ॥ अधो पृष्ठ पाछल रही, पूछकनो प-

रिमाण ॥ चंद चलत फल तेहनुं, पूर्व कथित पहिछाण ॥ ४० ॥ चलत सूर स्वर जीमणो, (रही) पूछे डाबी ओर ॥ चंद्रजोग बिन तेहनो, नवि कारिज विधि कोर ॥ ४१ ॥ सनमुख ऊर्ध्व दिशा रही, पूछे जो रवि मांहि ॥ चंद्रजोग बिन तेहनुं, कारज सीजे नांहि ॥ ४२ ॥ लग्न वार तिथि तत्त्व पुन, रास जोग दिसि सोध ॥ कारजके अक्षर गिणे, होवे साचो बोध ॥ ४३ ॥ सम अक्षर ससिकूं भलो, विषम भानु परधान ॥ तिनकी संख्या करनकूं, कहुं एम अनु-

मान ॥ ४४ ॥ चार आठ द्वादश युगल, षट दश चवदे जाण ॥ षोड्-शथी ससि योग ए, मह्य शुद्ध पहि-छाण ॥ ४५ ॥ एक तीन सर सात नव, एकादश अरु तेर ॥ तिथि संयम पचवीस पुन, रविजोग इम हेर ॥ ४६ ॥ लोककाज सहु परि-हरे, धरे सुनिहचल ध्यान ॥ श्रवण मनन चिंतन करत, लहत स्वरोदय-ज्ञान ॥ ४७ ॥ अथवा प्राणायाम जे, साधे चित्त लगाय ॥ ताकूं पहेली भूमिका, सिद्ध स्वरोदय थाय॥४८॥ प्राणायाम विचार तो, हे अ

गम अपार ॥ भेद दोय तस जाणीये, निश्चे अरु व्यवहार ॥ ४९ ॥ निह्चेथी निज रूपमें, निज परिणति होय लीन ॥ श्रेणीगत ज्यों संचरे, तों जोगी परवीण ॥ ५० ॥ उपसम क्षपक कही जुगल, श्रेणी प्रवचन मांहि ॥ तिणको काल स्वभाव वस, साधन हिवणा नांहि ॥ ५१ ॥ अहनिसि ध्यान अभ्यासथी, मन-थिरता जो होय ॥ तो अनुभव लव आज पुन, पावे विरला कोय॥५२॥ निज अनुभव लवलेशथी, कठिण मोय नाश ॥ अल्प भवे भवि ते

लहे, अविचलपुरको वास ॥५३॥
व्यवहारे ये ध्यानको, भेद नवि
कहीवाय ॥ भिन्न भिन्न कहीतां
थका, ग्रंथ अधिक हो जाय ॥ ५४ ॥
नाम मात्र अब कहत हूं, याको
किंचित भाव ॥ अधिक भवि तुम
जाणजो, गुरुगम तास लखाव ॥५५
अष्ट भेद है जोगके, पंचम प्राणा-
याम ॥ ताके सप्त प्रकार है, सकल
सिद्धके धाम ॥ ५६ ॥ रेचक पूरक
तीसरो, कुंभक भेद पिछाण ॥ शां-
तिक समता एकता, लीन भाव चित्त
आण ॥ ५७ ॥ पूरक पवन गहत

सुधी, कुंजक थिरता तास ॥ रेचक बाहिर संचरे, शांतिक ज्योति प्रकाश ॥५८॥ समता ध्येय स्वरूपमें, तिहां सूक्ष्म उपयोग ॥ गहे एकता गुण विषे, लीन नाव निज जोग ॥ ५९ ॥ लीन दशा व्यवहारथी, होत समाधि रूप ॥ निहचेथी चेतन ए, होवे शिवपुर जूप ॥ ६० ॥ स्वासाकूं अति थिर करे, ताणे नहीं लिगार ॥ मूल बंध दृढ लायके, करे बीज संचार ॥ ६१ ॥ वायु पांच शरीरमें, प्राण समान अपान ॥ उदान वायु चोथो कह्यो, पांचम अ-

निल अव्यान ॥६२॥ प्राण हिये पुन सर्वगत, तनमें रहत समान ॥ आधार चक्रगति जाणीये, तीजो वायु अपान ॥ ६३ ॥ उदान वासह कंठमें, संधिगति ए अव्यान ॥ पंच वायके बीज पुन, पंच हिये इम आन ॥६४॥ ऐँ पैँ रौँ ब्लौँ क्लौँ सुधी, पंच बीज परधान ॥ इनके गर्भित भेदको, कहत न आवे मान ॥ ६५ ॥ पंच बीज संचारथी, अनहद धुन जे होय ॥ निर्गम भेद धुनि तणो, जोगीश्वर लहे कोय ॥ ६६ ॥ वरण मात्र इण बीजके, कमल कमल थित

जाण ॥ भिन्न भिन्न गुण तेहनो,
शास्त्र थकी मन आण ॥ ६७ ॥ सकल सिद्धि इणमें वसे, सर्व लब्धि
इण मांहि ॥ केतिक आज हूं संपजे,
केतिक तो अब नांहि ॥ ६८ ॥
वरण नाभीमें संचरे, सोहं शब्द
उद्योत ॥ अजपजाप ते जाणीये,
अनुभव भाव उद्योत ॥ ६९ ॥
नाभीथी हिये संचरे, तिहां रंकार
प्रकाश ॥ मनथिरता तामे हुवे, अशुभ संकल्प होय नाश ॥ ७० ॥
सुरतभोर लावे गगन, तिरवेणी कर
वास ॥ तिहां अनहद धुनि उप-

जे, थिर योति परकास ॥ ३१ ॥

॥ चोपाइ छंद ॥

॥ अनहद् अधिष्ठाय जे देव, थिर चित्त देख करे तसु सेव ॥ ऋद्धि अनेक प्रकार देखावे, अद्भुत रूप दृष्ट तस आवे ॥ ३२ ॥ ऋद्धि देख नवि चित्त चलावे, ज्ञान समाधि ते नर पावे ॥ वेदभेद समाधि कहीये, गुरुगम लक्ष तेहनो लहीये ॥ ३३ ॥ नाभी पास हे कुंडलि नाडी, बंकनाल हे तास पिछाडी ॥ दशम द्वारका मारग सोइ, उलट वाट पावे नहीं कोइ ॥ ३४ ॥ मुद्रा पंच बंध त्रिय

जाणो, आसण चोरासी पहिचा-
णो ॥ तामे आसण युगपरधान,
मूलासण पद्मासण जाण ॥ ७५ ॥
अस्तविस्त वायु संचरे, कारण वि-
शेषे षट कर्म करे ॥ नेती धोती न-
वली कही, भेद चतुर्थ त्राटक फुनि
लही ॥ ७६ ॥ वस्ती पंचम भेद पि-
छानो, रस कपाल भाती मन आनो॥
किंचित आरंभ लख इण मांहि, जै-
नधरममें करीये नांहि ॥ ७७ ॥ त्रा-
टक नव लीये दोय भेद, करत मिटे
सहु तनका खेद ॥ रोग नवि होवे
तन मांहि, आलस उंघ अधिक

होये नांहि ॥ ७८ ॥ दृष्टि अष्ट योगनी कही, ध्यान करत ते अंतर लही॥ कीजे ए सालंबन ध्यान, निरालंबता प्रगटत ज्ञान ॥ ७ए ॥ मित्रा तारा दूजी जाण, बला चतुर्थी दीप्ता मन आण ॥ थिरा दृष्टि कांता फुनि लहीये, प्रज्ञा परा अष्टम दृग कहीये ॥ ८० ॥ सघन अघन दिन रयणी कही, ताका अनुभव यामें लही ॥ निरउपाधि एकांते स्थान, तिहां होय ए आतम ध्यान ॥ ८१ ॥ अल्प आहार निद्रा वश करे, हित सनेह जगथी परिहरे ॥ लोकलाज

नवि करे सिंगार, एक प्रीत प्रभुथी चित्त धार ॥ ७२ ॥ आशा एक मोक्षकी होय, बीजी दुविधा नवि चित्त कोय ॥ ध्यान जोग्य जाणो ते जीव, जे भवदुःखथी डरत सदीव ॥ ७३ ॥ परनिंदा मुखथी नवि करे, स्वनिंदा सुणी शमता धरे ॥ करे सहु विकथा परिहार, रोके कर्म आगमन धार ॥ ७४ ॥ हरख शोक हिरिदे नवि आने, शत्रु मित्र बराबर जाने ॥ परआशा तजी रहे निराश, तेहथी होय ध्यान अभ्यास ॥ ७५ ॥ ध्यान अभ्यासी जो नर होय, ताकूं दुःख

उपजे नवि कोय ॥ इंद्रादिक पूजे तस पाय, ऋद्धि सिद्धि प्रगटे घट आय ॥ ७६ ॥ पुष्पमाल सम विष-धर तास, मृगपति मृग सम होवे जास ॥ पावक होय पाणी ततका-ल, सुरभिसुत सदृश जस व्याल ॥ ७७ ॥ सायर गोपदनी परे होय, अटवी विकट नगर तस जोय ॥ रिपु लहे मित्राइ भाव, शस्त्र तणो नवि लागे घाव ॥ ७८ ॥ कमलपत्र करवाल वखानो, हालाहल अमृत करी जानो ॥ दुष्ट जीव आवे नहीं पांस, जो आवे तो लहे सुवास

॥ ८९ ॥ जो विवहार ध्यान इम
ध्यावे, इंद्रादिक पदवी ते पावे ॥
निहचे ध्यान लहे जब कोय, ताकुं
अवश्य सिद्धपद होय ॥ ९० ॥ सुख
अनंत विलसे तिहुं काल, तोरी
अष्ट कर्मकी जाल ॥ एसा ध्यान
धरो नितमेव, चिदानंद लही गुरु-
गम भेव ॥९१॥ ध्यान चार भगवंत
बताये, ते मेरे मन अधिके भाये ॥
रूपस्थ पदस्थ पिंडस्थ कहीजे, रू-
पातीत साध शिव लीजे ॥ ९२ ॥
रहत विकार स्वरूप निहारी, ताकी
संगत मनसा धारी ॥ निज गुण

अंस लहे जब कोय, प्रथम भेद तिण अवसर होय ॥ ९३ ॥ तीर्थंकर पदवी परधान, गुण अनंतको जाणी थान ॥ गुण विचार निज गुण जे लहे, ध्यान पदस्थ सुगुरु इम कहे ॥ ९४ ॥ भेदज्ञान अंतरगत धारे, स्वपरपरिणति भिन्न विचारे ॥ सकति विचारी शांतता पावे, ते पिंडस्थ ध्यान कहीवावे ॥ ९५ ॥ रूप रेख जामें नवि कोइ, अष्टगुणां करी शिवपद सोइ ॥ ताकूं ध्यावत तिहां समावे, रूपातीत ध्यान सो पावे ॥ ९६ ॥ प्रा-

णायाम ध्यान जे कहीये, ते पिंडस्थ भेद नवि लहीये ॥९७॥ मन अरु पवन समागम जानो, पवन साध मन निज घर आनो ॥ अहनिसि अधिका प्रेम लगावे, जोगानल घट मांहि जगावे ॥ अल्प आहार आसन दृढ करे, नयण थकी निद्रा परिहरे ॥ ९८ ॥ काया जीव भिन्न करी जाणे, कनक उपलनी पर पहिछाणे ॥ भेद दृष्टि राखे घट मांहि, मन शंका आणे कबु नांहि ॥९९॥ कारज रूप कथे मुखवाणी, अधिक नांहि बोले हित जाणी ॥

स्वपन रूप जाणे संसार, तन धन
जोबन लखे असार ॥ १०० ॥ श्री-
जिनवाणी हिये दृढ राखे, शुद्ध
ध्यान अनुभवरस चाखे ॥ विरला ते
जोगी जग मांहि, ताकूं रोग सोग
भय नांहि ॥ १०१ ॥ तेजकांति
तनमें अति वाधे, जे निश्चल चित्त
ध्यान आराधे ॥ अल्प आहार तन
होय निरोग, दिनदिन वधे अधिक
उपयोग ॥ १०२ ॥ नासा अग्रभाग
दृग धरी, अथवा दोउं संपुट करी ॥
हिये कमल नवपद जे ध्यावे, ताकुं
सहज ध्यानगति आवे ॥ १०३ ॥

माया बीज प्रणव धरी आद, वरण बीज गुण जाणे नाद ॥ चढता वरण करे थिर स्वास, लख धुर नाद तणो परकास ॥ १०४ ॥ प्राणायाम ध्यान विस्तार, कहेतां सुरगुरु न लहे पार ॥ तातें नाम मात्र ए कह्यां, गुरु मुख जाण अधिक जे रह्या ॥ १०५ ॥ प्राणायाम भूमि दश जाणो, प्रथम स्वरोदय तिहां पिछाणो ॥ स्वर परकाश प्रथम जे जाणे, पंच तत्त्व फुनि तिहां पिछाणे ॥ १०६ ॥ कहूं अधिक अब तास विचार, सुणो अधिक चित्त-

थिरता धार ॥ स्वरमें तत्त्व लखे जब कोइ, ताकूं सिद्ध स्वरोदय होइ १०७

॥ अडिल छंद ॥

॥ दोय स्वरोमें पांच तत्त्व पहिचाणीये, वर्ण मान आकार काल फल जाणीये॥इण विध तत्त्व लखाव साधता जे लहे, साची विसवावीस वात नर ते कहे ॥ १०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पृथ्वी जल पावक अनिल, पंचम तत नज जान ॥ पृथ्वी जल स्वामी शशि, अपर तीनको जान ॥ ॥ १०९ ॥ पीत श्वेत रातो वरण,

हरित श्याम पुन जान ॥ पंच वर्ण ये पांचके, अनुक्रमथी पहिछान ॥ ११० ॥ पृथिवी सनमुख संचरे, करपल्लव षट दोय ॥ समचतुरंस आकार तस, स्वर संगममें होय ॥ ॥१११॥ अधोभाग जल चलत है, षोडश आंगुल मान ॥ वर्तुल है आकार तस, चंद्र सरीखो जान ॥ ॥ ११२ ॥ चारांगुल पावक चले, ऊर्ध्व दिशा स्वर मांह ॥ त्रिकोण आकार तस, बाल रवि सम आह ॥ ११३ ॥ वायु तिर्छा चलत है, अष्टांगुल नितमेव ॥ ध्वजा रूप आ-

कार तस, जाणो इणविध भेव ॥ ११४॥ नासासंपुटमें चले, बाहिर नवि परकास ॥ सुन्न अहे आकार तस, स्वर युग चलत आकाश॥११५॥ प्रथम पच्चास पल दूसरो, चालीश त्रीजो त्रीश ॥ वीशरु दश पल चलत है, तत स्वरमें निशदीश ॥११६॥ घरी अढाइ पांच तत, एक एक स्वर मांहि ॥ अहनिशि इणविध चलत है, यामें संशय नांहि ॥११७॥ पंच तत्त्व स्वरमें लखे, भिन्न भिन्न जब कोय ॥ कालसमयका ज्ञान तस, वरस दिवसका होय ॥११८॥

प्रथम मेष संक्रांतिको, व्हे प्रवेश जब आय ॥ तबही तत्त्व विचारीये, स्वासा थिर ठहराय ॥ ११९ ॥ ना-बा स्वरमें होय ज्यो, मही तणो परकास ॥ उत्तम जोग वखाणीये, नीको फल है तास ॥ १२० ॥ पर-जाकुं सुख व्हे घणो, समो होय श्रीकार ॥ धान होय महीयल घणो, चोपदकुं अति चार ॥ १२१ ॥ ईत भीत उपजे नहीं, जनवृद्धि पण थाय ॥ इत्यादिक बहु श्रेष्ठ फल सुख, पामे अति राय ॥ १२२ ॥ चलत तत्त्व जल तिण समे, शशि

स्वरमें जो आय ॥ ताको फल अब कहत हूं, सुणजो चित्त लगाय ॥ १२३ ॥ मेघवृष्टि होवे घणी, उपजे अन्न अपार॥ सुखी होय परजा सहु, चिदानंद चित्त धार ॥ १२४ ॥ धर्म-बुद्धि सहुकूं रहे, पुण्य दानथी प्रीत॥ आनंद मंगल उपजे, नृप चाले शुभ नीत ॥ १२५ ॥ शशि स्वरमें ये जाणीये, तत्त्वयुगल सुखकार॥ तत्त्व तीन आगल रहे, तिनको कहूं विचार ॥१२६ ॥ लगे मेष संक्रांत तब, प्रथम घरी स्वर जोय ॥ जैसो स्वरमें तत्त्व व्है, तैसोही फल

होय ॥ १२७ ॥ जो स्वरमें पावक चले, अल्प वृष्टि तो होय ॥ रोग दोख होवे सही, काल कहे सहु कोय ॥१२८॥ देशभंग परजा दुःखी, अग्नि तत्त्व परकाश ॥ दोउं स्वरमें होय तो, अशुभ अहे फल तास ॥ १२९ ॥ वायु तत्त्व स्वरमें चलत, नृप विग्रह कछु थाय ॥ अल्प मेघ वरसे मही, मध्यम वर्ष कहाय ॥ १३० ॥ अर्द्धासा अन्न नीपजे, खरु थोडासा होय ॥ अनिल तत्त्वका इणी परे, मन मांहि फल जोय ॥ १३१ ॥ स्वर मांहि जो प्रथमही,

वहे तत्त्व आकाश ॥ तो ते काल
पिछाणीये, होय न पूरा घास ॥
१३१॥ इणविधथी ए जाणीये, तत्त्व
स्वरनके मांहि ॥ फल मनमें पण
धारीये, यामें संशय नांहि ॥ १३२ ॥
मधु मास सित प्रतिपदा, कर तस
लगन विचार ॥ चलत तत्त्व स्वर
तिण समे, ताको वर्ण निहार ॥१३४॥
प्रातसमे ससि स्वर विषे, मही
तत्त्व जो होय ॥ ता ते सर्व विचा-
रीये, सुखदायक अति होय ॥१३५॥
घनवृष्टि होवे घणी, समो होय श्री-
कार ॥ राजा परजाके हिये, हर्ष

संतोष विचार ॥ १३६ ॥ इत जीत
उपजे नहीं,महोटा जय.नवि कोय ॥
चिदानंद इम चंदमें, क्षिति तत्त्व
फल जोय ॥ १३७ ॥ चिदानंद जो
चंदमें, प्रात उदक परवेश ॥ तो ते
समो सुभिक्ष अति, वर्षा देश वि-
देश ॥१३८॥ शांति पुष्टि होवे घणी,
धर्म तणो अति राग ॥ भविक हिये
अति उपजे, दान अर्थ धन त्याग
॥१३९॥ जल धरणी दोउं वहे, दि-
वसपति घर आय ॥ प्रातकाल तो
ते वरस, मध्यम समो कहेवाय ॥
१४० ॥ तीन तत्त्व अब शेष जे, स्वरमें

तास विचार ॥ मध्यम निष्ठ कह्यो
तिको, पूर्वकथित चित्त धार ॥१४१॥
राजभंग परजा दुःखी, जो नभ
वहे स्वर मांहि ॥ पडे काल बहु
देशमें, यामें संशय नांहि ॥ १४२ ॥
स्वर सूरजमें अग्निको, होय प्रात
परवेश ॥ रोग सोगथी जन बहु, पावे
अधिक कलेश ॥ १४३ ॥ काल पडे
महीयल विषे, राजा चित्त नवि
चेन ॥ सूरजमें पावक चलत, एम
स्वरोदय वेन ॥ १४४ ॥ नृप विग्रह
कबु उपजे, अल्प वृष्टि पुन होय ॥
सूरजमें अनिलको, चिदानंद फल

जोय ॥ १४५ ॥ सुखमन स्वर जो ता दिवस, प्रातसमय जो होय ॥ जो-वणहार मरे सही, छत्र भंग पुन जोय ॥ १४६ ॥ कहूक थोडो उपजे, कहूक तेहुं नांहि ॥ सुखमन स्वरको इन परे, फल जाणो मन मांहि ॥ ॥ १४७ ॥ डुविध रीत जोवण तणी, कही वरषनी एम ॥ त्रीजी आगल जाणजो, धरी हियरे अति प्रेम ॥ १४८ ॥ माघ मास सित सप्तमी, फुनि वैशाखी त्रीज ॥ प्रातसमयको जोइये, वरष दिवसको बीज ॥१४९॥ निशापतिके गेहमें, जल धरणी

परवेश ॥ करे आय जो तिण समे, तो सुख देश विदेश ॥ १५० ॥ अपर तत्त्व निज नाथ घर, वहे अधम फल जाण ॥ उदक मही जो भानु घर, तो मध्यम चित्त आण ॥ ॥ १५१ ॥ एक अशुभ फुन एक शुभ, तीनुंमें जो होय ॥ सिद्ध होय फल तेहनुं, मध्यम निहचे जोय ॥ १५२ ॥ सहु परीक्षा भावमें, मेष भाव बलवान ॥ ता दिन तत्त्व निहारीके, फल हिरदे दृढ आन ॥१५३॥ अब जे जोवणहार नर, तेहनो कहूं विचार ॥ आप लखी अपणे हिये,

अपणो करहुं विचार ॥ १५४ ॥ चैत्र सुदि एकम दिने, शशि स्वर जो नवि होय ॥ तो तेहने तिहुं मासमें, अति उद्वेगसुं जोय ॥ १५५ ॥ मधु मास सित बीज दिन, चले न जो स्वर चंद ॥ गमन होय परदेशमें, तिहां उपजे दुःखदंद ॥ १५६ ॥ चैत्र मास सित त्रीजकूं, चंद चले नहि आय ॥ तो ताके तनमें सही, पित्तज्वरादिक थाय ॥ १५७ ॥ मरण होय नव मासमें, जो स्वर जाणे तास ॥ मधु मास सित चोथकूं, जो नवि चंद्र प्रकाश ॥१५८॥ निशापति

स्वर चैत सुदि, पांचमको नवि होय ॥ राजदंरू महोटा हूवे, संशय इहां न कोय ॥ १५ए ॥ चैत्र सुदि बठके दिवस, चंद्र चले नहि जास ॥ वरष दिवस जीतर सही, विणसे बंधव तास ॥ १६० ॥ चले न चंदा चैत सित, सप्तम दिन लव-लेश ॥ तस नर केरी गेहिनी, जावे जमके देश ॥ १६१ ॥ तिथि अष्टमी चैत्र सुदि, चंद विना जो जाय ॥ तो पीमा अति उपजे, जाग्य योग सुख थाय ॥ १६२ ॥ तिथि अष्टमनो चैत सित, दीनौ फल दरसाय ॥ होय

ससि शुन्न तत्त्वमें, तो उलटुं मन न्नाय ॥ १६३ ॥ तत्त्व बाणमें कहत हूं, प्रश्न तणो परसंग ॥ इणविध हिये विचारके, कथीये वचन अ-न्नंग ॥ १६४ ॥ जल धरणीके जोगमें, प्रश्न करे जे कोय ॥ निशानाथ पूरण वहत, तस कारज सिद्ध होय ॥ १६५ ॥ अनिल अगन आकाशको, जोग ससि स्वर मांहि ॥ होय प्रश्न करता थकां, तो कारज सिद्ध नांहि ॥ १६६ ॥ क्षिति उदक थिर काजकूं, उडुगणपति स्वर मांहि ॥ तत्त्वयुगल ए जाणीये, चर कारजकूं नांहि ॥

१६७ ॥ वायु अगनि नन्न तीन ए, चर काजे परधान ॥ तत्त्व हियेमें जानीये, उदय होत स्वर ज्ञान ॥ १६८ ॥ रोगी केरो प्रश्न नर, जो कोउ पूछे आय ॥ ताकूं स्वास विचारके, इम उत्तर कहेवाय ॥ १६९ ॥ ससि स्वरमें धरणी चलत, पूछे तस दिस मांहि ॥ तासे निहचे करी कहो, रोगी विणसे नांहि ॥ १७० ॥ चंद्र बंध सूरज चलत, पूछे भावी उरु ॥ रोगीको परसंग तो, जीवे नहीं विधि कोरु ॥ १७१ ॥ पूरण स्वरशुं आयके, पूछे खाली मांहि ॥ तो

रोगीकूं जाणजो, साता होवे नांहि ॥ १७२ ॥ खाली स्वरशुं आयके, वहते स्वरमें वात ॥जो कोउ रोगीनी कहे, तो तस नाहिंज घात ॥ १७३ ॥ वाय पित्त कफ तीन ये, जयो पिंडत्रय जोग ॥ समथी सुख होय देहमें, विषम हूआ होय रोग ॥ १७४ ॥ वाय चोराशी पिंडमें, पित्त पचीश प्रकार ॥ कफ त्रिय जेद वखाणीये, द्वादश सत चित्त धार ॥ १७५ ॥ वायु निवास उदर विषे, स्वामी हे तस सूर ॥ फुनि शत धमणी मांहि ते, रहत सदा जरपूर ॥१७६॥ खंध

मांहि पुन जाणजो, पित्त तणो नित वास॥ जठरागनिमें संचरत, दिवानाथ पति तास॥ १७७॥ नाभिकमलथी वाम दिस, करपल्लव त्रय जाण॥ नाड़ि युगल हे कफ तणी, रही हैयेमें आण॥ १७८॥ ससि स्वामि तस जाणजो, ये विवहारी वात॥ निश्चेथी लख एकमें, तीनुं आय समात॥ १७९॥ अपणी अपणी ऋत विषे, वाय पित्त कफ तीन॥ जोर जणावत देहमें, तस उपचार प्रवीन ॥ १८०॥ वैद्यकग्रंथनथी लख्यो, तिणका अधिक प्र-

कार ॥ मूल तीनसुं होत है, रोग अने-
क प्रकार ॥ १७१ ॥ अपणे अमल
विसारके, बीजाने घर जाय ॥
रोग कफादिथी जुइमे, सन्निपात
कहीवाय ॥ १७२ ॥ रोमरोममां
जगत गुरु, पोणा बे बे रोग ॥ न्नाख्या
प्रवचन मांहि ते, अशुन्न उदय तस
न्नोग ॥ १७३ ॥ प्रश्न करे रोगी तणो,
जैसा स्वरमें आय ॥ स्वर फुनि तत्त्व
विचारके, तैसा रोग कहाय ॥१७४॥
अपणे स्वरमें आपणा, तत्त्व चले
तिण वार ॥ तो रोगीना पिंरूमां,
रोग एक थिर धार ॥ १७५ ॥ स्वरमें

दूजा स्वर तणो, प्रश्न करत तत होय ॥ मिश्रनाववथी रोगनी, उत-पत्ति तस जोय ॥ १०६ ॥ पूरण स्वरथी आयके, पूछे पूरण मांहि ॥ सकल काज संसारके, पूरण संशय नांहि ॥ १०७ ॥ खाली स्वरमें आय-के, पूछे खाली मांहि ॥ जे जे काज दुन्नी तणो, ते ते होवे नांहि ॥१०८॥ खाली स्वरमें आयके, पूछे वहते मांहि ॥ सिद्ध काज कहो तेहनो, यामें दुविधा नांहि ॥ १०९ ॥ पूछे पूरण स्वर तजी, खाली स्वरकी ओर ॥ प्रश्न तास निफल हौ, सफल नहीं

विधि कीन ॥ १९० ॥ गुरुवार वायु
जलो, शनि दिवस आकाश ॥
चलत तत्त्व इम कायमें, पूरव रोग
विनाश ॥ १९१ ॥ प्रातसमय बुध-
वारकूं, क्षिति तत्त्व शुभ जाण ॥
सोमवार जल शुक्रकूं, तेज हियेमें
आण ॥ १९२ ॥ ससि सूर स्वरमां
अबै, करण जोग जे काम ॥ तस
विचार शुभ कहत हुं, सुखदायक
अभिराम ॥ १९३ ॥ देवल श्रीजि-
नराजनो, नवो निपावे कोय ॥
खात महूरत अवसरे, चंद्रजोग
तिहां जोय ॥ १९४ ॥ अमी स्रवत

ससि जोगमें, अरुणद्युति थिर होय ॥ करत प्रतिष्ठा बिंबनी, अति प्रजाव तस जोय ॥१९५॥ तखत मूलनायक प्रज्ञु, बैठावे तिण वार ॥ जिनघर कलश चढावतां, चंद्रजोग सुखकार ॥ १९६ ॥ पोषधशाल निपावतां, दानशाल घर हाट ॥ महेल दूर्ग गढ कोटनो, रचित सुघट धुरघाट ॥ १९७ ॥ संघमाल आरोपतां, करतां तीरथ दान ॥ दीक्षा मंत्र बतावतां, चंद्रजोग परधान ॥१९८॥ घर नवीन पुर नगरमें, करता प्रथम प्रवेश ॥ वस्त्र आज्ञूषण संग्र-

हत, लेत इजारे देश॥ १एए ॥ जोगाभ्यास करत शुद्धि, औषध भैषज मीत ॥ खेती बाग लगावता, करता नृपथी प्रीत ॥२००॥ राजतिलक आरोपता, करता गढ परवेश ॥ चंदजोगमें नृपति, विलसे सुख सुदेश ॥२०१॥ राज्य सिंघासन पग धरत, करत और थिर काज ॥ चंद्रयोग शुज जाणजो, चिदानंद महाराज ॥ २०२ ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ मठ देवल अरु गुफा बनावे, रतन धातुना घाट घमावे ॥ इत्या-

दिक सहु जगमें काम, चंद्योगमें अति अभिराम ॥ २०३ ॥ चंद्रजोग थिर काज प्रधान, कह्यो तास किंचित अनुमान ॥ स्वर सूरजमें करीये जेह, सुणो श्रवण दे कारज तेह ॥ २०४ ॥ विद्या पढे ध्यान जो साधे, मंत्र साध अरु देव आराधे ॥ अरजी हाकमके कर देवे, अरि विजयका बीमा लेवे ॥ २०५ ॥ विष अरु भूत उतारण जावे, रोगीकूं जो दवा खिलावे ॥ विघन हरण शांतिजल नाखे, जो उपाय कष्टीकूं भाखे ॥ २०६ गज वाजी वाहन हथियार, लेवे

रिपु विजय चित्त धार ॥ खान पान कीजे असनान, दीजे नारीकूं रुतु-दान ॥२०७॥ नया चोपडा लिखे लिखावे, वणिज करत कछु वृद्धि थावे ॥ नानजोगमें ए सहु काज, करत लहे सुखचेन समाज॥ २०८ ॥ भूपति दक्षण स्वरमें कोइ, युद्ध करण जावे सुण सोइ ॥ रणसंग्राम मांहि जस पावे, जीत अरि पाछो घर आवे ॥ २०९ ॥ सायरमें जे पोत चलावे, वंछित द्वीप वेगे ते पावे ॥ वेरी भवन गवन पग दीजे, नानजोगमें तो जस लीजे ॥ २१० ॥

ऊंट महीष गो संग्रह करतां, साट वदत सरिता जल तरतां ॥ करज-द्रव्य कांहूकुं देतां, ज्ञानजोग शुभ अथवा लेतां ॥ २११ ॥ इत्यादिक चर कारज जे ते, ज्ञानजोगमें क-रीये ते ते ॥ लाभालाभ विचारी कहीये, नहिंतर मनमें जाणी रहीये ॥ २१२ ॥ विवाहदान इत्यादिक काज, सौम्य चंद्रजोगे सुखसाज ॥ क्रूर काममें सूर प्रधान, पूर्वक-थित मनमें ते जान ॥ २१३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंद्रजोग थिर काजकूं, उत्तम

मह्रा वखाण ॥ नानजोग चर काजमें, श्रेष्ठ अधिक मन आण ॥ १४ ॥ सुखमन चलत न कीजीये, चर थिर कारज कोय ॥ करत काम सुखमन विषे, अवस हाणि कबु होय ॥ ॥१५॥ नवनप्रतिष्ठादिक सहू, वरजित सुखमन मांहि॥ गामांतर जावा नणी, पगला नरीये नांहि ॥ १६ ॥ डुःख दोह्रग पीमा लहे, चित्तमें रहे कलेश ॥ चिदानंद सुखमन चलत, जो कोइ जाय विदेश ॥ १७ ॥ कारजकी हानि हुवे, अथवा लागे वार ॥ अथवा मित्र मिले

नहीं, सुखमन भाव विचार ॥ १८ ॥
श्वास शीघ्र अति पालटे, हीन चंद्र
हीन सूर ॥ ते सुखमन स्वर जा-
णजो, नाश अनिल भरपूर ॥ १९ ॥
सुखमन स्वर संचारमें, कीजे आतम
ध्यान ॥ हिरदगति अहिनदकी,
लहीये अनुभवज्ञान ॥ २० ॥ आ-
तमतत्त्व विचारणा, उदासीनता
भाव ॥ भावत स्वर सुखमन विषे,
होवे ध्यान जमाव ॥ २१ ॥ चर थिर
तीजीए कही, द्विस्वभावकी बात ॥
इण अनुक्रमथी औरभी, कारज
सकल कहात ॥ २२ ॥ तत्त्वस्वरूप

नीहारवा,कहूं उपाय विचार॥जाव शुजाशुज तेहने, अधिक हियामें धार ॥ २३ ॥ श्रवण अंगुठा मध्य-मां, नासापुट पर थाप ॥ नयण त-र्जनीथी ढकी,भृकुटीमां लख आप ॥ २४ ॥ पडे बिंडु जृकुटी विषे, पीत श्वेत अरु लाल ॥ नील श्याम जैसी हुवे, तैसी तिहां निहाल ॥ २५ ॥ जैसा वर्ण नीहारीये, तैसा तत्त्वविचार ॥ श्वास गति स्वरमें लखो, इछा फुन आकार ॥ २६ ॥ प्रथम वायु स्वरमें वहे, डुतीय अ-गनि वखाण ॥ त्रीजी जू चोथुं

सलिल, नन पंचम मन आण॥
२७॥ वाम दिशाथी स्वर उठी, वहे
पिंगला मांहि॥ ताकूं संक्रम कह-
त है, यामें संशय नांहि ॥ २८ ॥
तत्त्व उदक नू शुन कहे, तेज
मध्य फलदाय ॥ हाण मृत्यु दायक
सदा, मारुत व्योम कहाय ॥ २९॥
ऊर्ध्व अधो अरु मध्य पुट, तीर्ना
संक्रमरूप॥ पंच तत्त्व यह वहत है,
जाणो नेद अनूप ॥ ३० ॥ ऊर्ध्व
मृत्यु शांति अधो, उच्चाटण तिरि
गाय ॥ मध्य स्तंनन नन विषे, वर-
जित सकल उपाय ॥ ३१ ॥ जंघ

मही नाभी अनिल, तेज खंध
जल पाय ॥ मस्तकमें नभ जाणजो,
दिने थान बताय ॥ ३२ ॥ थिर
काजे परधान भू, चरमें सलिल
विचार ॥ पावक सम कारज विषे,
वायु उच्चाटण धार ॥ ३३ ॥ व्यो-
म चलत कारज सहू, करीये
नांहि मीत ॥ ध्यान जोग अभ्या-
सकी, धारो यामें रीत ॥ ३४ ॥
पश्चिम दक्षिण जल मही, उत्तर
तेज प्रधान ॥ पूरव वायु वखाणजो,
नभ कहीये थिर थान ॥ ३५ ॥
सिद्धि पृथ्वी जल विषे, मृत्यु अगन

विचार ॥ क्षयकारी वायु सिद्धि,
नभ निष्फल चित्त धार ॥ ३६ ॥
धीरजथी पृथ्वी विषे, जल सिद्धि
ततकाल ॥ हाण अगनि वायु थकी,
काज निःफल नभ जाल ॥ ३७ ॥
संग्रामादि कृत्यमें, प्रबल हूतासन
होय, चंद्र सूर संग्रह विषे, फलदा-
यक अति जोय ॥ ३८ ॥ जीवित
जय धन लाभ फुन, मित्र अर्थ
जुध रूप ॥ गमनागमन विचारमें,
जानो मही अनूप ॥ ३९ ॥ कलह
शोक दुःख भय तथा, मरण कबू
उतपात ॥ संक्रमभाव समीरमें,

फलदृष्टि विख्यात ॥ ४० ॥ राजनाश
पावक चलत, पृच्छक नरनी हाण ॥
दुर्भिक्ष होय महीयल विषे, रोगा-
दिक फुनि जाण ॥ ४१ ॥ दुर्भिक्ष
घोर विग्रह सुधी, देशभंग भय जा-
ण ॥ चलत वायु आकाश तत, चौ-
पद हानि वखाण ॥ ४२ ॥ महेंद्र
वरुण जुग जोगमें, घनवृष्टि अति
होय ॥ राजवृद्धि परजा सुखी, समो
श्रेष्ठ अति होइ ॥ ४३ ॥ मही उद-
क दोउं विषे, चंद्रथान थिति रूप ॥
चिदानंद फल तेहनुं, जाणो परम
अनूप ॥ ४४ ॥ मही मूल चिंता

लखो, जीव वाय जल धार ॥ तेज
धातु चिंता लखो, शुभ आकाश
विचार ॥ ४५ ॥ बहु पाद पृथ्वी
विषे,जुगपद जल अरु वाय॥ अग्नि
चतुःपद नभ उदे,विगत चरण क-
हेवाय ॥ ४६ ॥ रवि राहु कुज ती-
सरो, शनि चतुर्थ वखाण ॥ पंच
तत्त्वके ज्ञान घर, स्वामी अनुक्रम
जाण ॥ ४७ ॥ बुध पृथ्वी जलको
ससि,शुक्र अगनि पति मीत ॥ वायु
गुरु सुर चंदमें, तत्त्व स्वाम इण रीत
॥ ४७ ॥ स्वामी अपणो आपणो,
अपणे घरके मांहि॥शुभ फलदायक

जाणजो, यामें संशय नांहि ॥ ४ए ॥ जय तुष्टि पुष्टि रति, क्रीमा हास्य कहाय ॥ एम अवस्था चंदनी, षट जल जूमें थाय ॥ ५० ॥ ज्वर निद्रा परियास पुन, कंप चतुर्थी पिठा-ण ॥ वेद अवस्था चंदनी, वायु अग-निमें जाण ॥५१॥ प्रथम गतायु दू-सरी, मृत्यु नज्ञके संग ॥ कही अवस्था चंदनी, द्वादश एम अ-नंग ॥ ५२ ॥ मधुर कषायल तिक्त पुन, खाटा रस कहवाय ॥ नज्ञ अव्यक्त रस पंचके, अनुक्रम दीये बताय ॥ ५३ ॥ जैसा रस आस्वाद-

नी, होय प्रीत मन मांहि ॥ तैसा
तत्त्व पिछाणजो, शंका करजो नांहि
॥ ५४ ॥ श्रवण धनिष्ठा रोहिणी,
उत्राषाढ अभीच ॥ ज्येष्ठा अनुराधा
सपत, श्रेष्ठ महीके बीच ॥ ५५ ॥
मूल उत्तरा भाद्रपद, रेवती आर्द्रा
जाण ॥ पूर्वाषाढ अरु शतभिषा,
आश्लेषा जल ठाण ॥५६॥ मघा पूर-
वा फाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद स्वात ॥
कृत्तिका भरणी पुष्य ए, सप्त अग्नि
विख्यात ॥५७॥ हस्त विशाखा
मृगसिरा, पूनर्वसु चित्राय ॥ उत्रा-
फाल्गुण अश्विनी, अनिलधाम सु-

खदाय ॥ ५८ ॥ नज्ञथी पवन पवन थकी, पावक तत परकास ॥ पावकथी पाणी लखो, मही लखो फुनि तास ॥ ५९ ॥ क्रोधादिक अगनि उदे, इछा वायु मझार ॥ क्षांत्यादिक गुण मन विषे, जल ज्यूं मांहि विचार ॥ ६० ॥ गुदाधार धरणी तणो, लिंग उदकनो जाण ॥ तेज धार चक्षु सुधी, वायु घ्राण वखाण ॥ ६१ ॥ श्रवण द्वार नज्ञना कह्या, शब्दादिक आहार ॥ चिदानंद इण पांचका, जाणो उर निहार ॥ ६२ ॥ चंद चलत नवि चालीये, जुरू करणकुं

मीत ॥ चलत चंदमें तेहना, शत्रुनी होय जीत ॥ ६३ ॥ दिवसपति स्वर मांहि जे, युद्ध करणकूं जाय ॥ विजय लहे संग्राममें, शत्रुसेन पलाय ॥ ६४ ॥ अपना स्वर दक्षण चले, शत्रुना पण तेह ॥ जीत लहे संग्राममें, प्रथम चढे नर जेह ॥ ६५ ॥ ससि चलत कौ नृपति, मत जावो रण मांहि ॥ खेलजीत अरियण लहे, यामें संशय नांहि ॥ ६६ ॥ सुखमन स्वर संग्राममें, भला कहे नवि कोय ॥ जावे सुखमन स्वर विषे, शीस कटावे सोय ॥ ६७ ॥ दूर देश संग्राममें,

जाता शशि परधान ॥ निकट युद्धमें जाणजो, जयकारी स्वर जान ॥ ६८ ॥ सनमुख ऊर्ध्व दिशा रही, जुद्ध प्रश्न करे कोय ॥ सम अक्षर ससि स्वर हूआ, जीत तेहनी होय ॥ ६९ ॥ पूछे दक्षण मध्यथी, दूत प्रश्न करे जेह ॥ विषमाक्षर जानु हुआ, खेत विजय लहे तेह ॥७०॥ युद्धयुगलनी पूर्ण दिशि, रही प्रश्न करे कोय ॥ प्रथम नाम जस उच्चरे, जीत लहे नर सोय ॥ ७१ ॥ रिक्त पक्षमें आयके, मिथुन युद्ध परसंग ॥ पूछत पहेला हारीये, दूजा रहत

अभंग ॥ ७२ ॥ करत युद्ध परियाण
वा, रिक्त मांहे लहे हार ॥ अल्पब-
ली नृपति थकी, महाबली चित्त
धार ॥ ७३ ॥ महा कटक सनमुख
चले, थोडासा दल जोड ॥ पूरण
तत्त्व प्रकाशमें, जीत लहे विधि
कोड ॥ ७४ ॥ मही तत्त्वमें युद्ध
वा, करे प्रश्न परियाण ॥ दोउं दल
सम उतरे, इम निहचे करी जाण
॥ ७५ ॥ करे प्रश्न परियाण वा,
वरुण तत्त्वके मांहि ॥ होय मेल
तिहां परस्परी, युद्ध जाणजो नांहि
॥ ७६ ॥ मही उदक होय एककूं,

दूजाकूं जो नांहि॥ मही वरुण तिहां जीतीये, यामें संशय नांहि॥ ७७॥ प्रश्न करे अथवा लडे, अथवा करे प्रयाण॥ वहत हुताशन तेहनी, रणमें होवे हाण॥ ७८॥ प्रश्न प्रयाण युद्ध जे करे, अनिल तत्त्वमें कोय॥ निश्चेथी संग्राममें, नागे पहेला सोय॥ ७९॥ व्योम वहत कोउ नृपति, करे प्रश्न परियाण॥ अथवा युद्ध तिण अवसरे, करत मरण तस जाण॥८०॥ चंद्र चलत नृपति मरण, सम जोधा रवि

मांहि ॥ वायु वहत जंजे कटक, संशय करजो नांहि ॥ ७१ ॥ नामधेय सहश कही, पूछे पूरण मांहि॥ प्रथम नाम जस उच्चरे, तस जय संशय नांहि ॥ ७२ ॥ रणमें जे घायल हूवे, तेहनी पूछे वात ॥ चिदानंद ते पुरुषकुं, उत्तर एम कहात ॥ ७३ ॥ आपणी दिशथी आयके, पूछे पूरण मांहि ॥ जास नाम कहे तास सुण, घाव जाणजो नांहि ॥ ७४ ॥ पूछे खाली स्वर विषे, घायलका परसंग ॥ जस पूछे तस रण विषे, घाव कहीजे अंग ॥ ७५ ॥

पृथ्वी उदर बताइये, जल चलता पग जाण ॥ पावक उर हिरिदे विषे, वायु जंघा वखाण ॥ ७६ ॥ घाव शीसमें जाणजो, चलत तत्त्व आकाश ॥ स्वरमें तत्त्व विचारके, पृछककूं इम भाष ॥ ७७ ॥ पूरण प्राण प्रवाहमें, निज तत घर स्वर होय ॥ प्रबल जोग आवी मल्या, सुखे विजय लहे सोय ॥ ७८ ॥ आपणे स्वर जल तत्त्व है, शत्रुकूं नहि होय ॥ रिपु मरण निज हाथथी, जीत आपणी होय ॥ ७९ ॥ गर्भ तणा परसंग अब, सुणजो चित्त

लगाय ॥ स्वर विचार तासुं कह्यो,
जो कोइ पूछे आय ॥ ९० ॥ क्लीब
कन्यका सुत जनम, गर्भ पतन वा
धार ॥ दीर्घ अल्प आयु तणा, भा-
खो एम विचार ॥ ९१ ॥ चंद्र चलत
पूछे कोउ, पूरण दिशिमें आय॥ गर्भ-
वतीना गर्भमें, तो कन्या कहीवाय
॥ ९२ ॥ दिवसपति पूरण चलत,
पूछे पूरण मांहि ॥ पुत्र पेटमें जाण-
जो, यामें संशय नांहि ॥ ९३ ॥
स्वर सुखमनमें आयके, पूछे गर्भ
विचार ॥ नारी केरी कूखमें, गर्भ नपुं-
सक धार ॥ ९४ ॥ भान चलत पूछे

कोउ, वाकुं चंदा होय ॥ पुत्र जनम तो जाणजो, पण जीवे नहि सोय ॥ ९५ ॥ दिवसपति संचारमें, करे प्रश्न कोइ आय ॥ स्वर सूरज वाकुं हुआ, सुखदायक सुत थाय ॥ ९६ ॥ करे प्रश्न ससि स्वर विषे, वाकुं जो रवि होय ॥ होय सुता जीवे नहीं, कहो एम तस जोय ॥ ९७ ॥ चंद चलत आवी कहे, वाकुं चंद उद्योत ॥ कन्या निश्चे तेहने, दीर्घ स्थिति-धर होत ॥ ९८ ॥ चलत मही सुत जाणजो, प्रश्न करत तिण वार ॥ राजमान सुखीया घणा, रूपे देवकुमार

॥ ९९ ॥ उदक तत्त्वमें आयके, करे प्रश्न जो कोय ॥ सुत सुखीया धनवंत तस, षटरस भोगी होय ॥ ३००॥ तत्त्व युगल जे भान घर, चलत पुत्र पहिछाण ॥ निसानाथ घर होय तो, कन्या हिरिदे आण ॥ ३०१ ॥ पूछत पावक तत्त्वमें, गर्भ-पतन तस होय ॥ जनमे तो जीवे नहीं, विगत पुण्य नर सोय ॥ ३०२ ॥ प्रश्न प्रभंजन तत्त्वमें, करतां छाया होय ॥ अथवा । वज्ञ विचारजो, गले गर्भमें सोय ॥ ३०३ ॥ पूछत नभ परकासमें, गर्भ नपुंसक जाण॥

चलत चंद कन्या कहो, बांझ जाव चित्त आण ॥ ३०४ ॥ शून्य युगल स्वर मांहि जो, गर्भ प्रश्न करे कोय॥ ताथी निश्चय करी कहो, कन्या उपजे दोय ॥ ३०५ ॥ चंद सूर दोउं चलत, चंद होय बलवान ॥ गर्भवतीना गर्भमें, सुता युगल पहिचान ॥ ३०६ ॥ चंद सूर दोउं चलत, रवि होय बलवान ॥ गर्भवतीना गर्भमें, पुत्र युगल पहिचान ॥ ३०७ ॥ जौण तत्त्वमें नारीकूं, रहे गर्भउधान ॥ अथवा जनमे तेहनो, फल अनुक्रम पहिचान

॥ ८ ॥ राज्यमान सुखीया महा, अथवा आपदू नूप ॥ रहे गर्न धरणी चलत, होवे काम सरूप ॥९॥ धनवंता जोगी भ्रमर, चतुर विचक्षण तेह ॥ नीतवंत नारी गरज्ञ, जल चलतां रहे जेह ॥ १० ॥ रहे गर्न पावक चलत, अल्प उमर ते जाण ॥ जीवे तो दुःखीया हुवे, जन्मत माता हाण ॥ ११ ॥ दुःखी देश भ्रमण करे, विकल चित्त बुद्धिहीण ॥ रहे गर्न जो वायुमें, इम जाणो परवीण ॥ १२ ॥ रहे गर्न नन्न चालतां, गर्न तणी होय हाण

॥ जन्म तणो फल तत्त्वमें, इणहि अनुक्रम जाण ॥ १३ ॥ सुत पृथ्वी जलमें सुता, चलत प्रभंजन जाण ॥ गर्भपतन पावक विषे, क्लीब गगन मन आण ॥ १४ ॥ अपना अपना स्वर विषे, है परधान विचार ॥ तत्त्व पक्ष अविलोकतां, ये बीजा निरधार ॥ १५ ॥ संक्रम अवसर आयके, प्रश्न करे जो कोय ॥ अथवा गर्भ रहे तदा, नाश अवश्य तस जोय ॥ १६ ॥ कह्या एम संक्षेपथी, गर्भ तणा अधिकार ॥ करत गमन परदेशमें, ताका कहुं विचार ॥१७॥

दक्षण पश्चिम दिशि विषे, चंद्रजो-
गमें जाय ॥ गमन रहे परदेशमें,
सुख विलसे घर आय ॥ १८ ॥
पूरव उत्तर दिश विषे, भानुयोग
बलवंत ॥ वंछितदायक कहत है, जे
स्वर वेदी संत ॥ १९ ॥ विदिशि
आपणी आपणी, अपणा घरमें
लीन ॥ शुभ अरु इतर उभय विषे,
समज लेहु परवीन ॥ २० ॥ चलत
चंद नवि जाइये, पूरव उत्तर देश
॥ गया न पाछा बाहुडे, अथवा
लहे कलेश ॥२१॥ दक्षिण पश्चिम
मत चलो, भानजोगमें कोय ॥

मरे न तोहु मरण सम, कष्ट अवस तस होय ॥ २२ ॥ दूर गमनमें सर्वदा, प्रबल जोग चित्त धार ॥ निकट पंथमे मध्यहु, जाणीजे सुखकार ॥२३॥ तत्त्व युगल शुभ है सुधी, करत प्रश्न परियान ॥ नाम तेहनुं चित्तमें, मही उदक मन आण ॥२४॥ ऊर्द्ध दिशापति चंद है, अधो दिशापति भान॥ क्रूर सोम्य कारज लखी, गमन भाव पहिचान ॥ २५ ॥ सुखमन चलत न कीजीये, शुद्धि प्रदेश प्रयाण ॥ जावे तो जीवे नहीं, कारज हानि पिछाण ॥ २६ ॥ तत्त्व

पंचके गमनमें, होत जंग पचवीश ॥ देशिक ग्रंथ करी सदा, बीतत जाण जोतीष ॥ २७ ॥ जे नर वसत विदेशमें, ताकी पूछे वात ॥ सुखी आहे अथवा दुःखी, ताथी एम कहात ॥ २८ ॥ उदक तत्त्व जो होय तो, कहो तास धरी नेह ॥ सुखे सिद्ध कारज करी, वेगो आवे तेह ॥ २९ ॥ होय मही स्वरमें उदे, पूछे प्रश्न तिवार ॥ तो थिर थानिक जाखीये, दुःख नहि तास लगार ॥ ३० ॥ परवासी निज थान तजी, गया दूसरे धाम ॥ कछु चिंता चित्त

तेहने, चलत वायु कह्यो आम॥३१॥
रोग पीड़ तनमें मह्या, पावक चल-
त वखाण॥ नत्त परकाश विदेशमें,
मरण अवश तस जाण ॥ ३२ ॥
सूर विषम ससि मांहि सम,पगलां
भरतां मीत ॥ वार तिथि इणविध
करत, होवे सुण तस रीत ॥ ३३॥
चंद चलत आगल धरी, भावा पग-
लां चार ॥ गमन करत तिण अव-
सरे, होय उदधिसुतवार ॥ ३४ ॥
स्वर सूरजमें जीमणा, पग आगल
धरे तीन ॥ चलत गमनमें होत है,
दिनकर वार प्रवीन ॥ ३५ ॥ स्वर

विचार कारज करत, सफल होय ततकाल ॥ तत्त्वज्ञान एहनां कह्यां, चमत्कार चित्त जाल ॥ ३६ ॥ तिथि वार नक्षत्र फुनि, करणयोग दिगशूल ॥ लक्षणपात होरा लीये, दग्धतिथि अरु मूल ॥ ३७ ॥ वृष्टिकाल कुलिका लगन,व्यतिपात स्वर जान॥ शुक्र अस्त अरु चोगणी, यमघंटादिक जान ॥ ३८ ॥ इत्यादिक अपयोगको, यामें नहीं विचार ॥ ऐसो ए स्वरज्ञान नित, गुरुगमथी चित्त धार ॥ ३९ ॥ विगत उदक सर हंस विण, काया तरु विन पात ॥

देव रहित देवल यथा, चंद्र विना जिम रात ॥ ४० ॥ शोभित नवि तप विण मुनि, जिम तप समता टार ॥ तिम स्वरज्ञान विना गणक, शोभत नहिय लगार ॥ ४१ ॥ साधन विन स्वरज्ञानको, लहे न पूरण भेद ॥ चिदानंद गुरुगम विना, साधनहु तस खेद ॥ ४२ ॥ दक्षण स्वर भोजन करे, भावे पीये नीर ॥ भावी कर खट सूवतां, होय निरोग शरीर ॥ ४३ ॥ चलत चंद भोजन करत, अथवा नारी भोग ॥ जल पीवे सूरज विषे, तो तन नावे रोग ॥

४४ ॥ होय अपच भोजन करत, भोग करत बलहीण ॥ जल पीवत विपरीत इम, नेत्रादिक बल क्षीण ॥ ४५ ॥ पांच सात दिन इणी परे, चले रीत विपरीत ॥ होय पीरु तनमें कबु, जाणो धरी परतीत ॥४६॥ बहिरभूमि इंगला चिलत, पिंगलामें लघुनीत ॥ सयनदिसा सूरज विषे, करीये निसदिन मीत ॥४७॥ दिवस चंद स्वर संचरे, निशा चलावे सूर ॥ स्वर अभ्यास एसो करत, होय उमर भरपूर ॥ ४८ ॥ कथित भाव विपरीत जो, स्वर चाले

तन मांहि ॥ मरण निकट तस जा-
णजो, यामें संशय नांहि ॥ ४९ ॥
सार्द्ध युगल घटिका चले, चंद सूर
स्वर वाय ॥ स्वास त्रयोदश सुखमना,
जाणो चित्त लगाय ॥ ५० ॥ अष्ट
पहर जो ज्ञानघर, चले निरंतर
वाय ॥ तीन वरसका जीवणा, अ-
धिक रहे न काय ॥ पाठांतरे ॥
यामें संशय नांहि ॥ ५१ ॥ चले
निरंतर पिंगला, षोडश प्रहर प्र-
मान ॥ दोय वरस काया रहे, पीछे
जावे प्रान ॥ ५२ ॥ ज्ञान निरंतर
जो चले, रात दिवस दिन तीन ॥

वरस एक रही होय फुनि, दीरघ निद्रा लीन ॥ ५३ ॥ सोलस दिन जो चालघर, चले रात दिन स्वास ॥ चिदानंद निश्चल करी, जीवे ते इक मास ॥ ५४ ॥ मास एक अहनिसि वहे, सूरज स्वर तन मांहि ॥ दोय दिनाका जीवणा, यामें संशय नांहि ॥ ५५ ॥ चले निरंतर सुखमना, पांच घमी स्वर चाल ॥ पांच घमी सुखमन चलत, मरन होय ततकाल ॥ ५६ ॥ नहीं चंद सूरज नहीं, सुखमनजी नहीं होय ॥ मुखसेंती स्वासा चलत, चार

घमी थिति जोय ॥ ५७ ॥ दिनमें
तो ससि स्वर चले, निशा ज्ञान
परकाश ॥ चिदानंद निश्चे अति,
दीरघ आयु तास ॥ ५८ ॥ दिवा-
नाथ होय दिवसमें, निसा निसा-
कर स्वास ॥ चिदानंद षटमास
तस, जीवितव्यनी आश ॥ ५९ ॥
चार आठ द्वादश दिवस, षोमश
वीश विचार ॥ चलत चंद नितमेव
इम, आयु दीरघ धार ॥ ६० ॥
रात दिवस जो तीन दिन, चले
तत्त्व आकाश ॥ वरस दिवस काया-
थिति, तिस उपरांत विनाश ॥ ६१ ॥

अहोराति दिन चार जो, चले तत्त्व आकाश ॥ थिरता तनकी जाण-जो, उत्कृष्टी षटमास ॥ ६२ ॥
अरुणधूती ध्रुवबालिका, मातृमंडले जोय ॥ ए चारुं नवि लखी शके, आयु हीन नर कोय ॥ ६३ ॥
जिहां नासा अग्रे फुनि, भूको मध्य विचार ॥ स्वर जोयण कीकी कही, अनुक्रमथी चित्त धार ॥६४॥
रसना ससि दिवस थिति, घ्राण हुतासन जान ॥ सप्तबालिका तारका, कालमान पहिचान ॥ ६५ ॥
लघुनीति वडिनीत पुन, वायुश्रव

सम काल ॥ होय दिवस दस तेहनी, कायथिति बुध न्याल ॥ ८६ ॥ गाज बीज दोउं नहीं, मेघ न खंचे धार ॥ कागवास आवास तस, हंसागमन विचार ॥८७॥ अधिक चंद्रसुख न्याल जस, चलत कायमें जान ॥ चंद सूर दोउं गया, मरन समो पहिचान ॥ ८८ ॥ एक पक्ष विपरीत स्वर, चलत रोग तन थाय ॥ दोउं पक्ष सज्ञान अरि, त्रीजे मरण कहाय ॥ ८९ ॥ अग्नि बाण बिंदू लखण, इत्यादिक बहु रीत ॥ काल परीक्षाकी सहु, जाणो गुरुगम

मीत ॥ ७० ॥ अवसर निकट मरण तणो, जब जाणे बुधलोय ॥ तब विशेष साधन करे, सावधान अति होय ॥ ७१ ॥ धर्म अर्थरु काम शिव, साधन जगमें चार ॥ व्यवहारे व्यवहार लख, निहचे निज गुण धार ॥७२॥ मूरख कुल आचारकूं, जाणत धरम सदीव ॥ वस्तुस्वजाव धरम सुधी, कहत अनुजवी जीव ॥ ७३ ॥ खेह खजानाकूं अरथ, कहत अज्ञानी जीह ॥ कहत द्रव्य दरसावकूं, अर्थ सुज्ञानी जीह ॥ ७४ ॥ दंपतिरति क्रीमा प्रत्ये,

कहत दुर्मति काम ॥ कामचित्त अभिलाखकूं, कहत सुमति गुण-धाम ॥ ७५ ॥ इंद्रलोककूं कहत शिव, जे आगमदृग हीण ॥ बंध-अभाव अचलगति, भाखत नित परवीन ॥ ७६ ॥ इम अध्यातमपद लखी, करत साधन जेह ॥ चिदानंद निज धर्मनो, अनुभव पावे तेह ॥ ७७ ॥ समयमात्र परमाद नित, धर्म-साधना मांहि ॥ अथिररूप संसार लिख, रे नर करीये नांहि ॥ ७८ ॥ छीजत छिन छिन आउखो, अंज-लि जल जिम मीत ॥ कालचक्र

माथे जमत, सोवत कहा अजीत ॥ ७९ ॥ तन धन जोवन कारिमा, संध्या राग समान ॥ सकल पदारथ जगतमें, सुपन रूप चित्त जान ॥ ८० ॥ मेरा मेरा मत करे, तेरा है नहीं कोय ॥ चिदानंद परिवारका, मेला है दिन दोय ॥८१॥ ऐसा जाव निहारी नित, कीजे ज्ञान विचार ॥ मिटे न ज्ञान विचार बिन, अंतरजाव विकार ॥८२॥ ज्ञानरवि वैराग जस, हीरिदे चंद समान ॥ तास निकट कहो किम रहे, मिथ्या तम दुःखखान ॥ ८३ ॥

आप आपणे रूपमें, मगन ममत म-
लखोय ॥ रहे निरंतर समरसी,
तास बंध नवि कोय ॥ ७४ ॥ परप-
रणित परसंगशुं, उपजत विणसत
जीव ॥ मिट्यो मोह परन्नावके, अ-
चल अबाधित शिव ॥ ७५ ॥ जैसे
कंचुक त्यागथी, विणसत नहीं नुयं-
ग ॥ देहत्यागथी जीव पण, तैसे
रहत अन्नंग ॥ ७६ ॥ जो उपजे सो तुं
नहीं, विणसत ते पण नांहि ॥ बोटा
महोटा तुं नहीं, समज देख दि-
ल मांहि ॥ ७७ ॥ वरणन्नांति तोमें
नहीं, जात पात कुल रेख ॥ राव

रंक तुं है नहीं, नहीं नहीं बाबा नहीं भेख॥ ७७॥ तुं सहुमें सहुथी सदा, न्यारा अलख सरूप॥ अकथ कथा तेरी महा, चिदानंद चिद्रूप ॥७ए॥ जनम मरण जिहां हैं नहीं, ईत भीत लवलेश ॥ नहीं शिर आण नरिंदकी, सोही अपणा देश ॥ए०॥ विनाशिक पुदगल दिशा, अविनाशी तुं आप ॥ आपा आप विचारतां, मिटे पुण्य अरु पाप ॥ ए१ ॥ बेडी लोह कनकमयी, पाप पुण्य युग जाण ॥ दोउंथी न्यारा सदा, निज सरूप पहिछाण ॥ ए२ ॥ जुगल

गति शुभ पुण्यथी, इतर पापथी जोय ॥ चारुं गति निवारीये, तब पंचमगति होय ॥ ८३ ॥ पंचमगति विण जीवकूं, सुख तिहुं लोक मजार ॥ चिदानंद नवि जाणजो, ए महोटो निरधार ॥ ८४ ॥ इम विचार हीरिदे करत, ज्ञान ध्यान रस लीन॥ निरविकल्प रस अनुभवी, विकल्पता होय छिन ॥ ८५ ॥ निरविकल्प उपयोगमें, होय समाधि रूप॥ अचलज्योति जलके तिहां, पावे दरस अनूप ॥ ८६ ॥ देख दरस अद्भुत महा, काल त्रास मिट जाय॥

ज्ञानयोग उत्तम दिशा, सद्गुरु दीये बताय ॥ ९७ ॥ ज्ञानालंबन दृढ ग्रही, निरालंबता जाव ॥ चिदानंद नित आदरो, एहिज मोक्ष उपाव ॥ ९८ ॥ थोडासामें जाणजो, कारज रूप विचार ॥ कहत सुणत श्रुतज्ञानका, कबहुं न आवे पार॥९९॥ में मेरा ए जीवकूं, बंधन महोटा जान ॥ में मेरा जाकुं नहीं, सोही मोक्ष पीछान ॥ ४०० ॥ में मेरा ए जावथी, वधे राग अरु रोष ॥ राग रोष जौं लौं हिये, तौं लौं मिटे न दोष ॥४०१॥ राग द्वेष जाकूं नहीं, ताकुं काल न

खाय ॥ काल जीत जगमें रहे, महो-
टा बिरुद धराय ॥ ४०२ ॥ चिदानंद
नित कीजीये, समरण श्वासोश्वास
॥ वृथा अमूलक जात है, श्वास ख-
बर नहीं तास ॥ ४०३ ॥ एक महू-
रत मांहि नर, स्वरमें श्वास विचार॥
तिहुंतर अधिका सातसो, चालत
तीन हजार ॥ ४०४ ॥ एक दिवसमें
एक लख, सहस त्रयोदश धार ॥ ए-
कशत नेवुं जात है, श्वासोश्वास
विचार ॥ ४०५ ॥ फुनि शत सहस
पंचाणवे, भाखे तेत्रीश लाख ॥ एक
मासमें श्वास इम, एहवी प्रवचन

शाख ॥ ४०६ ॥ चउसत अडताली सहस, सप्त लक्ष स्वर मांहि ॥ चार क्रोड इक वरसमां, चालत शंसय नांहि ॥ ४०७ ॥ चार अबज कोडी सपत, पुनः अडतालीस लाख ॥ स्वास सहस चालीस सुधी, सो वरसांमें भाख ॥ ४०८ ॥ वर्त्तमान ए कालमें, उत्कृष्टी थिति जोय ॥ एक शत सोले वर्षनी, अधिक न जीवे कोय ॥ ४०९ ॥ सोपंक्रम आयु कह्यो, पंचमकाल मजार ॥ सोपक्रम आयु विषे, घात अनेक विचार ॥ ४१० ॥ मंद स्वास स्वरमें

चलत, अल्प उमर होय खीण ॥
अधिक स्वास चालत अधिक,
हीण होत परवीण ॥ ४११ ॥ चार
समाधि लीन नर, षट शुन्नध्यान
मजार ॥ तुष्णा नाव वेग जु दस,
बोलत द्वादश धार ॥ ४१२ ॥
चालत सोलस सोवतां, चलत स्वास
बावीश ॥ नारी भोगवतां जाण-
जो, घटत स्वास बत्रीश ॥ ४१३ ॥
थोडी वेला मांहे जस, वहत अ-
धिक स्वर श्वास ॥ आयु छीजे बल
घटे, रोग होय तन तास ॥ ४१४ ॥
अधिका नांहि बोलीये, नहीं रहीये

परु सोय॥ अति शीघ्र नवि चालीये, जो विवेक मन होय ॥ ४१५ ॥ जाण गति मन पवनकी, करे स्वास थिर रूप ॥ सोही प्राणायामको, पावे भेद अनूप ॥ ४१६ ॥ मेरु रुचक प्रदेशथी, सूरतडोरकु पोय ॥ कमलबंध छेड्या थकां, अजपा समरण होय ॥ ४१७ ॥ भमर गुफामें जायके, करे अनिलकूं पान ॥ पछे हुतासन ते हने, मिले दसम अ-स्थान ॥ ४१८ ॥ मारगमें जातां थकां, जे जे अचरिज थाय ॥ शांत दशामें वर्त्तता, मुखथी कही न जाय

॥ ४१९ ॥ वधे भावना चित्तमें, तन मन वचन अतीत ॥ तिम तिम सुखसायर तणी, उठे लहेर सुण मीत ॥ ४२० ॥ इंद्र तणां सुख भोगतां, जे तृप्ति नवि थाय ॥ ते सुख सुण छिन एकमें, मिले ध्यानमें आय ॥ ४२१ ॥ ध्यान विना नवि लखी शके, मन कल्लोल स्वरूप ॥ लख्या विना किम उपशमे, येहू भेद अनूप ॥ ४२२ ॥ आसण पद्म लगायके, मूलबंध दृढ लाय ॥ मेरुदंड सीधा करे, भेद द्वारकों पाय ॥ ४२३ ॥ करे स्वास संचार तव,

विकल्प ज्ञाव निवार ॥ जिम जिम
थिरता उपजे, तिम तिम प्रेम वधार
॥ ४२४ ॥ प्रेम विना नवि पाइये,
करता जतन अपार ॥ प्रेम प्रतीतें
है निकट, चिदानंद चित्त धार
॥ ४२५ ॥ जो रचना तिहुं लोकमें,
सो नर तनमें जान ॥ अनुज्ञव विण
होवे नहीं, अंतर तास पीछान
॥ ४२६ ॥ अंतरज्ञाव विचारतां, म-
नवायु थिर थाय ॥ तिम तिम नाज्ञी-
कमलमें, पूरक थइ समाय ॥ ४४७ ॥
नाज्ञी स्वास समायके, उर्द्ध रेचसि
होय ॥ अजप जाप तिहां होत है,

विरला जाणे कोय ॥ ४२८ ॥
हंकारेस्वर उठत है, यइ संकार
समाय ॥ अजप जाप तिहां होत
है, दीनो नेद बताय ॥ ४२९ ॥
जोगार्णवथी जाणजो, अधिक नाव
चित्त लाय ॥ आय ग्रंथ गोरव घणो,
तातें कह्या न जाय ॥ ४३० ॥ देहि
मध्य नाकी तणो, बहु रूप विस्तार
॥ पिंम स्वरूप निहारवा, जाणो तास
विचार ॥ ४३१ ॥ वटशाखा जिम
विस्तरी, नानी कंदथी जेह ॥ नेद
हुतासन जाणजो, पान निसा तिम
तेह ॥ ४३२ ॥ अह नुजंगाकार

ते, वलय अढाइ तास ॥ जाण कुं-
डलि नाडीतें, नाडी मांहे निवास
॥ ४३३ ॥ ऊर्ध्वगामिनी तेहथी,
नाडी दश तन मांहि ॥ अधोगामि-
नी दश सुगुण, लघु गणित कछु
नांहि ॥ ४३४ ॥ दो दो तिरछी
सहु मली, चतुर्विंशति जाण ॥ दश
वायु परवाहिका, दश प्रधान मन
आण ॥ ४३५ ॥ इंगला पिंगला
सुखमना, गांधारी कहीवाय ॥ हस्त
जीह पंचम सुधी, पुष्या देइ बताय
॥ ४३६ ॥ सप्तम जाण यशस्विनी,
अलंबुखा चित्त धार ॥ कहु संखणी

नाम्नीए, दशके नाम विचार ॥४२७॥ वामजाग हे इंगला, पिंगला दक्ष-ण धार ॥ नासा पुटमें संचरत, सुख-मन मध्य निहार ॥ ४२८ ॥ वामचक्षु गंधारिका, दक्षिण नयन मजार ॥ हस्त जीह पुष्या सुधी, दक्षण कान प्रचार ॥ ४२ए ॥ वामे कान यशस्वि-नी, अलंबुखा मुखथान ॥ कहु लिंग अस्थान है, गुदा संखणी जाण ॥ ४४० ॥ दिग धमणी ये कायमें, प्राणाश्रित नित जाण ॥ वायु आश्रित जे रही, ते दश कहुं व-खाण ॥ ४४१ ॥ प्राणापान समान

जे, उद्यान अव्हान विचार ॥
ये प्रधान वायु धमण, पंच अनुक्र-
म धार ॥ ४४२ ॥ नाग कूर्म अरु
किरकरा, देवदत्त कहीवाय ॥ नाभी
धनंजय पांचमी, गवणि दीन ब-
तलाय ॥ ४४३ ॥ हिया गुदा नाभी
गला, तन सांध चित्त धार ॥ प्रा-
णादिकनी इण परे, अनुक्रम वास
विचार ॥ ४४४ ॥ नागवायु पर-
काशथी, प्रगट होय उद्गार ॥ कूर्म-
वायु नाभी उदे, उन्मीलन चित्त
धार ॥ ४४५ ॥ छीक किरकराथी
हूवे, देवदत्त परकाश ॥ जंभाये

आवे सुथिर, जाण धनंजय वास
॥ ४४६ ॥ इत्यादिक नाम्नी तणो,
कह्यो अल्प विस्तार ॥ अधिक
हियामें धारजो, गुरुगम तास वि-
चार ॥ ४४७ ॥ जब स्वर बाहिरकूं
चले, तब कोइ पूछे आय ॥ कोटी
यतनथी तेहनो, कारज सिद्ध न
थाय ॥ ४४८ ॥ स्वर नीतरकों चा-
लतां, आवी पूछे कोय ॥ कोटी
नांति करी तेहनां, कारज सिद्ध
न थाय ॥ ४४९ ॥ पंच तत्त्व जो ये
कहे, ते तो संज्ञारूप ॥ इन ऊपर
जे मन ग्रह्यो, ते तो मिथ्या कूप ॥

४५० ॥ आमनायये हे सुधी, स्वर विचारके काज ॥ सम्यग् दृगथी जो ग्रहे, सोख हे सुख समाज ॥ ४५१ ॥ कह्यो एह संक्षेपथी, ग्रंथ स्वरोदय सार ॥ जणे गुणे ते जीवकुं, चिदानंद सुखकार ॥ ४५२ ॥ कृष्णासाढी दसमी दिन, शुक्रवार सुखकार ॥ निधि इंडु सर पूरणता, चिदानंद चित्त धार ॥ पाठांतर ॥ संवत्सर मुनि पूर्णता, नंद चंद चित्त धार ॥ १९०७ ॥ ४५३ ॥ इति श्रीकपूरचंदजी महाराजकृत स्वरोदयज्ञान संपूर्णम् ॥

श्रीसद्गुरुपरमात्मने नमः

अथ गद्यबन्ध स्वरोदयज्ञान प्रारंभः

विचार करवाथी जणाय छे के स्वरोदयनी विद्या एक मोटी पवित्र तथा आत्माना कल्याणनी करवा-वाली विद्या छे, केमके एनो अभ्यास करीने पूर्व कालना महानुभाव पोताना आत्मानुं कल्याण करी अविनाशी पदने प्राप्त करी चुक्या छे. जुवो, श्रीजिनेंद्रदेव अने श्रीगणधर महाराज ए विद्याना पूरा ज्ञाता हता

अर्थात् तेउ ए विद्यानां प्राणायाम आदि सर्व अंग अने उपांगने सारी रीते जाणता हता.जुवो के जैनागम-मां लख्युं छे के "श्रीमहावीर अरि-हंत पछी चौद पूर्वधारी श्रीनद्रबाहु स्वामी ज्यारे थया हता तथा तेउ श्रीए सूक्ष्म प्राणायामना ध्याननुं प-रावर्तन कर्युं हतुं ते वखते समस्त संघे मलीने तेओने विज्ञप्ति करी हती" इत्यादि.

इतिहासनुं अवलोकन कर-वाथी जणाय छे के जैनाचार्य श्री हेमचंद्रसूरि तथा दादासाहेब श्री

जिनदत्तसूरि आदि अनेक जैनाचार्य ए विद्याना पूरेपूरा अभ्यासी हता. एथी न्यारा थोड़ा सैका पूर्वे आनंदघनजी महाराज, चिदानंदजी महाराज (कपूरचंदजी) तथा ज्ञानसारजी (नारायणजी) महाराज आदि मोटा मोटा आध्यात्मिक पुरुषो थइ गया छे के जेना करेला ग्रंथ परथी जणाय छे के आत्माना कल्याणने वास्ते पूर्वकालमां साधुलोको योगाभ्यासनी घणी सारी रीते क्रिया करता हता; परंतु हालमां कोइ कारणोथी ते व्यवहार

देखवामां आवतो नथी, केमके प्रथम तो अनेक कारणो वडे शरीरनी शक्ति घटी गइ छे, बीजुं धर्म तथा श्रद्धा पण घटवा लाग्यां छे, त्रीजुं साधुलोको पुस्तकादि परिग्रहने एकठा करवामां अने पोताना मान महिमामां साधुत्व (साधुपणुं) समजवा लाग्या छे, चोथुं लोभे पण कांइक कांइक पोतानो पंजो तेमना पर फेलाव्यो छे. कहो, हवे स्वरोदयज्ञाननो झगडो शीरीते सारो लागे! केमके आ काम तो निर्लोभीपणानुं तथा आत्मज्ञानीओनुं छे. वली आ

पण कही देवामां अतिशयोक्ति न-
हीं लागे के मुनिओना आत्मकल्या-
णनो मुख्य मार्ग आ छे. हवे बीजी
वात ए छे के ते मुनिओ पोताना आ-
त्मकल्याणनो मार्ग छोडीने अज्ञान
संसारी जनो पर पोताना ढोंग द्वा-
राए पोतानुं साधुत्व प्रगट करे.

प्राणायाम योगनी दश भूमि छे,
जेमां पहेलीज भूमि स्वरोदयज्ञानज
छे.आ ज्ञानना अभ्यास द्वाराए मो-
टा मोटा गुप्त भेदोने मनुष्य सुगम-
तापूर्वक जाणी शके छे तथा घणा रो-
गोनी ओषधि पण करी शके छे.स्वरो-

दय पदनो शब्दार्थ श्वासनुं नीकाल-
वुं थाय छे, एटला माटे आमां मात्र
श्वासनीज ओलखाण करवामां आ-
वे छे अने नाक पर हाथने राखतांज
गुप्त वातोनुं रहस्य चित्रनी माफक
सामुं आवे छे, अने अनेक सिद्धिओ
उत्पन्न थाय छे; परंतु आ वात नक्की
छे के आ विद्यानो अभ्यास सा-
री रीते गृहस्थोथी थइ शकतो नथी,
केमके प्रथम तो आ विषय घणो क-
ठिन छे अर्थात् आमां अनेक सा-
धननी आवश्यकता होय छे. बीजुं
आ विद्यानो जे ग्रंथ छे तेमां आ वि-

षयनुं अति कठिनतानी साथ घणा संक्षेपथी वर्णन करेलुं छे, जे सर्व साधारण मनुष्योथी समजवामां आवी शकतुं नथी. त्रीजुं आ विद्याना सारी रीते जाणवावाला तथा बीजाने सुगमतापूर्वक अभ्यास करावी शके एवा पुरुषो पण विरला स्थले जोवामां आवे छे. मात्र एज कारण छे के वर्तमान काले आ विद्याना अभ्यास करवानी इच्छावाला पुरुषो आमां प्रवृत्त थइने लाभने बदले अनेक हानिउ करी बेसे छे, अस्तु.

आ सर्व वातोनो विचार करी तथा गृहस्थोने पण आ विद्याना कांइक अभ्यासनी आवश्यकता समजीने ते गृहस्थोथी सिद्ध थइ शकवा योग्य आ विद्यानुं कांइक विज्ञान अत्र लखवामां आवे छेः-आशा छे के गृहस्थो आ पुस्तकना आधारथी आ विद्याना अभ्यास द्वारा लाभ पामशे, केमके आ विद्यानो अभ्यास आभव अने परभव निःसंदेहपणे सुखनी प्राप्ति करावी शके छे.

स्वरोदयनुं स्वरूप तथा आवश्यक नियम.

नासिकानी अंदरथी जे श्वास नीकळे छे तेनुं नाम स्वर छे. तेने स्थिर चित्ते करी ओळखाण करी शुभाशुभ कार्यनो विचार करवो.

स्वरनो संबंध नाडीओथी छे. जो के शरीरमां नाडीओ घणी छे, परंतु तेमां २४ प्रधान छे. तेमां पण नव अति प्रधान छे. तेमां पण ३ ने घणीज प्रधान मानेली छे. तेनां नाम इंगला, पिंगला अने सुषुम्ना (सु-

खमना) छे. तेओनुं वर्णन आगल करवामां आवशे.

यादीमां राखवुं जोइए के डुंटीनी वचमां जे चक्र छे त्यांथी श्वास-नो प्रकाश थाय छे अने पाछली वंकनालमां थइने नाडीमां जइ स्थिर थाय छे.

दक्षिण अर्थात् जमणी बाजु जे श्वास नाक द्वाराए नीकले छे तेने इंगला नाडी के सूर्यस्वर कहे छे. वाम अर्थात् डाबी बाजु जे श्वास नाक द्वाराए नीकले छे तेने पिंगला नाडी के चंद्रस्वर कहे छे.

अने बंने तरफ अर्थात् नासिकानी जमणी अने डाबी एम बंने बाजु जे श्वास नीकले तेने सुखमना नाडी कहे छे. आमां ज्यारे डाबी बाजु स्वर चाले त्यारे चंद्रनो उदय जाणवो अने ज्यारे जमणी बाजु स्वर चाले त्यारे सूर्यनो उदय जाणवो.

शीतल अने स्थिर कार्यो चंद्रस्वरमां करवां. जेवां केः— नवा मंदिरनुं बनाववुं, नवा मंदिरना पायानुं खोदाववुं, मूर्त्तिनी प्रतिष्ठा करवी, मूल नायकनी मूर्त्तिने स्थापित करवी, मंदिर पर दंड तथा कलशनुं चडाववुं,

उपाश्रय, धर्मशाला, दानशाला, विद्याशाला, पुस्तकालय, घर, हाट, महेल अने गढनुं बनाववुं, संघनी मालानुं पहेराववुं, दान देवुं, दीक्षा देवी, यज्ञोपवित देवुं, नगरमां प्रवेश करवो, नवा मकानमां प्रवेश करवो, लुगडां अने घरेणांनुं कराववुं अथवा मौल्य (किमत) लेवुं, नवां घरेणां तथा लुगडांनुं पहेरवुं, पदवी लेवी, ओषधि बनाववी, खेती करवी, बाग बगीचा बनाववा, राजा विगेरे मोटा पुरुषोनी साथे मित्रता करवी, राज्यसिंहासन पर

बेसवुं, योगाभ्यास करवो इत्यादि. तात्पर्य ए छे के आ सर्व कार्यो चंद्रस्वरमां करवां जोइए, केमके चंद्रस्वरमां उपरनां कार्यो करवाथी सुखकारी थाय छे.

क्रूर अने चर कार्योने सूर्यस्वरमां करवां जोइए. जेवां केः—विद्या शिखवानो प्रारंभ करवो, ध्यानसाधवुं, मंत्र तथा देवनी आराधना करवी, राजा के हाकेमने अरज करवी, वकीलात अथवा मुखत्यारी लेवी, वैरीनी साथे मलतापणुं करवुं, सर्पनुं विष तथा भूतनुं उतारवुं, रोगीने दवा

देवी, विघ्ननी शांति करवी, कष्ट-
वाळी स्त्रीनो उपाय करवो, हाथी
घोडा रथ विगेरे लेवां, भोजन करवुं,
स्नान करवुं, स्त्रीने ऋतुदान देवुं,
नवी वही लखवी, व्यापार करवो,
राजाना शत्रुनी साथे लडाइ करवा
जवुं, वहाण के आगबोटने समु-
द्रमां चलाववी, वैरीना मकानमां
पग मूकवो, नदी विगेरेमां तरवुं,
कोइने रुपीआ उधार देवा अथवा
कोइनी पासेथी उधार लेवा इत्यादि.
तात्पर्य ए छे के आ सर्व कार्यो सूर्य-

स्वरमां करवां, केमके तेम करवाथी सर्व कार्यों सिद्ध थाय छे.

जे समये चालता चालता एक स्वर बंध थइने बीजो स्वर थाय छे अर्थात् ज्यारे चंद्रस्वर बदलीने सूर्यस्वर थाय के सूर्यस्वर बदलीने चंद्रस्वर थाय ते वखते पांच सात मिनिट सुधी बंने स्वर चालवा लागे छे तेने सुखमना स्वर कहे छे. आ स्वरमां कोइ पण काम न करवुं, केमके आ स्वरमां कोइ पण काम करवाथी ते निष्फल निवडे छे, तथा तेथी क्लेश पण उत्पन्न थाय छे.

कृष्ण (वदि)पक्षनो स्वामी सूर्य छे अने शुक्ल(सुदि)पक्षनो स्वामी चंद्र छे.

कृष्णपक्षना पडवाना प्रातःकाले जो सूर्यस्वर चाले तो ते पण घणा आनंदनी साथे वीते.

शुक्लपक्षना पडवाना प्रातःकाले जो चंद्रस्वर चाले तो ते पक्ष पण सुख ने आनंदनी साथे वीते.

जो चंद्रनी तिथिमां(शुक्लपक्षना पडवाना प्रातःकाले) सूर्यस्वर चाले तो क्लेश अने पीडा थाय छे तथा कांइक द्रव्यनी पण हानि थाय छे.

सूर्यनी तिथिमां (कृष्णपक्षना पम्रवाना प्रातःकाले)जो चंद्रस्वर चाले तो पीम्रा, क्लेश तथा राज तरफथी कोइ पण प्रकारनो जय थाय छे अने चित्तमां चंचलता उत्पन्न थाय छे.

जो कदाचित् बंने पक्षना(सुदि ने वदिमां) पडवाना सवारमां सुखमना चाले तो ते महीनामां लाज्ञ हानि समान थाय छे.

कृष्णपक्षनी १५ तिथिमां क्रमथी त्रण त्रण तिथिउ सूर्य अने चंद्रनी थाय छे. जेमके पम्रवो,बीज, त्रीज ए त्रण तिथि सूर्यनी छे तथा चोथ, पां-

चम अने छठ ए ३ चंद्रनी तिथि छे. ए रीते अमावास्या सुधी बाकीनी तिथिओ विषे पण समजवुं. आमां ज्यारे पोतपोतानी तिथिए बंने स्वर (चंद्र अने सूर्य) चाले छे त्यारे ते कल्याणकारी थाय छे.

शुक्लपक्षनी १५ तिथिओमां क्रमथी त्रण त्रण तिथिओ चंद्र अने सूर्यनी थाय छे अर्थात् पडवो, बीज अने त्रीज ए त्रण तिथि चंद्रनी छे तथा चोथ, पांचम अने छठ ए त्रण तिथि सूर्यनी छे. ए रीते पूर्णिमा सुधी बाकीनी तिथिओ विषे पण समजवुं.

आमां पण आ बंने स्वर (चंद्र अने सूर्य) पोतपोतानी तिथिए प्रातःकाळे चाळे तो शुभकारी थाय छे.

वृश्चिक, सिंह, वृष अने कुंभ ए चार राशि चंद्रस्वरनी छे, तथा ए राशिओ स्थिर कार्यमां श्रेष्ठ छे.

कर्क, मकर, तुल अने मेष ए चार राशि सूर्यस्वरनी छे अने चर कार्यमां श्रेष्ठ छे.

मीन, मिथुन, धन अने कन्या ए चार राशि सुखमनानी बंने स्वभाववाळी छे. आमां कार्यो करवाथी हानि थाय छे.

ऊपरनी बारे राशिऊथी बारे महीनाऊ पण जाणी लेवा अर्थात् ऊपर लखेल जे संक्रांति लागे तेज चंद्र, सूर्य अने सुखमनाना महीना समजी लेवा.

जो कोइ पण मनुष्य पोताना कोइ पण कामने माटे प्रश्न पूछवा आवे अने आपणा सामो तथा डाबी बाजु अथवा तो ऊंचे बेसीने प्रश्न करे अने ते समये जो आपणो चंद्रस्वर चालतो होय तो कहेवुं के तारुं कार्य सिद्ध थशे.

जो कोइ पण माणस आपणी नीचे,

पाछळ के जमणी बाजु उभो रहीने प्रश्न करे अने ते समये आपणो सूर्यस्वर चाळतो होय तो कहेवुं के तारुं काम सिद्ध थशे.

जो कोइ माणस जमणी बाजु उभो रहीने प्रश्न करे अने ते समये आपणो सूर्यस्वर चाळतो होय तथा लग्न, वार* अने तिथिना सघळा योग जो मळी जाय तो कहेवुं के तारुं काम नक्की सिद्ध थशे.

---

* मंगळ, शनि अने रवि ए त्रण वार सूर्यना छे तथा सोम, बुध, गुरु अने शुक्र ए चार वार चंद्रना छे.

जो कोइ प्रश्न करवावाळो जमणी बाजु उभो रहीने के बेसीने प्रश्न करे अने ते समये आपणो चंद्र-स्वर चालतो होय तो सूर्यनी तिथि अने वार विना ते शून्य दिशानो प्रश्न सिद्ध थइ शकतो नथी.

जो कोइ पाछळ उभो रहीने प्रश्न करे अने ते समये आपणो चंद्रस्वर चालतो होय तो कही देवुं के कार्य सिद्ध नहीं थाय.

जो कोइ डाबी बाजु उभो रहीने प्रश्न करे तथा ते समये आपणो सूर्यस्वर चालतो होय तो चंद्रयोग

स्वर विना ते कार्य सिद्ध नहीं थाय.

ए रीते जो कोइ आपणा सामो अथवा आपणाथी उंचो रहीने प्रश्न करे तथा ते समये आपणो सूर्यस्वर चालतो होय तो चंद्र-स्वरना सर्व योगो मळ्या विना ते कार्य कदि सिद्ध नहीं थाय.

स्वरोमां पांचे तत्त्वोनी ओळखाण.

उपर कहेल चंद्र अने सूर्य ए बंने स्वरोमां पांच तत्व चाले छे अने ते तत्त्वोनां रंग, परिमाण, आकार

अने माप पण होय छे. ए वास्ते स्वरोदयविषयमां ए विषय पण जाणी लेवो आवश्यक छे, केमके जे पुरुष आ वातना विज्ञानने बरोबर जाणे छे तेनी कहेली हकीकत अवश्य मले छे. ए वास्ते आ विषयनुं वर्णन जरूरनुं छे.

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु अने आकाश ए पांच तत्त्व छे. तेमां पृथ्वी अने जलनो स्वामी चंद्र छे अने अग्नि, वायु अने आकाश ए त्रणनो स्वामी सूर्य छे.

पृथ्वीनो रंग पीलो, जलनो

रंग सफेद, अग्निनो रंग लाल, वायुनो रंग लीलो अने आकाशनो रंग कालो छे.

पृथ्वी तत्त्व सामुं चाले छे तथा नाकथी बार आंगल सुधी दूर जाय छे, अने तेना स्वरनी साथे समचोरस आकार थाय छे.

जल तत्त्व नीचे चाले छे तथा नाकथी सोल आंगल सुधी दूर जाय छे अने तेनो आकार चंद्रमा जेवो गोल छे.

अग्नि तत्त्व ऊपर चाले छे तथा

नाकथी चार आंगल सुधी दूर जाय छे अने तेनो त्रिकोण आकार छे.

वायु तत्त्व तीर्छुं चाले छे तथा नाकथी आठ आंगल सुधी दूर जाय छे अने तेनो आकार ध्वजा जेवो छे.

आकाश तत्त्व नाकनी अंदरज चाले छे अर्थात् बंने स्वरोमां (सुखमना स्वरमां) चाले छे तथा एनो आकार कांइ नथी.

एक एक स्वर अढी घडी एटले एकेक कलाक चाले छे अने एमां आ पांचे तत्त्व रात दिवस आ रीते चाले छे. पृथ्वी तत्त्व पचास पल,

जल तत्त्व चालीश पल, अग्नि तत्त्व त्रीश पल, वायु तत्त्व वीश पल अने आकाश तत्त्व दश पल ए रीते त्रणे नाडीउ उपर कहेलां पांचे तत्त्वोनी साथे रात्रि दिवस प्रकाशित रहे छे.

पांचे तत्त्वोना ज्ञाननी रीति.

पांच रंगनी पांच गोली अने विचित्र रंगनी एक गोली बनावी ए छ गोलीउने आपणी पासे राखवी अने ज्यारे मनमां इछा थाय के हाल कयुं तत्त्व छे त्यारे

आंख वींचीने एक गोली लइ ले-
वी. ते मनमां धारेल तथा गोलीनो
रंग एकज जातनो नीकले तो ते
तत्त्व छे एम जाणवुं.

अथवा बीजा कोइ पुरुषने कहो
के तमे कोइ रंग धारो. ज्यारे ते पो-
ताना मनमां रंग धारे त्यारे आ-
पणा नाकना स्वरमां तत्त्व जोइ लेवुं
तथा आपणा तत्त्वनो विचार करी-
ने ते पुरुषनो धारेल रंग बताववो
के तमे अमुक रंग धारेल छे. जो ते-
णे धारेल रंग बरोबर मली जाय
तो जाणवुं के तत्त्व बरोबर मले छे.

अथवा अरीसाने आपणा होठनी पासे लगाडीने तेनी उपर बलपूर्वक नाकनो श्वास छोडवो. ए प्रमाणे करवाथी ते अरीसा पर जे आकारनुं चिह्न पडे ते आकार प्रथम लखेल तत्त्वोना आकार साथे मलवो जोइए, अने जे तत्त्वना आकार साथे आ आकार मले ते तत्त्व ते वखते छे एम जाणवुं.

अथवा बे अंगुठाथी बे कानने, बंने तर्जनीथी बे आंखोने, बंने मध्यम आंगलीथी बे नाकनां छिद्रो बंध करीने अने बंने

अनामिका तथा कनिष्ठिका आंग-
लीथी एटले चार आंगलीथी होठ-
नी उपर नीचेथी खुब दबावीने
गुरुनी बतावेली रीतिथी मनने
त्रकुटीमां लइ जवुं. पछी ते जगोए
जेवुं अने जे रंगनुं बिंदु मालूम
पडे ते तत्त्व छे एम जाणवुं.

उपर कहेल रीतिथी थोडा दिव-
स सुधी साधन करवुं जोइए, केमके
अभ्यासथी मनुष्यने तत्त्वोनुं ज्ञान
थवा लागे छे अने तत्त्वोनुं ज्ञान थ-
याथी ते पुरुष शुभाशुभ कार्यो
शीघ्रताथी जाणी शके छे.

स्वरमा प्रगट थयेल तत्त्वो द्वारा वर्षफल जाणवानी रीति.

हमणां कह्युं के पांचे तत्त्वोनुं ज्ञान थयाथी मनुष्य थवावालां शुभाशुभ कार्यों जाणी शके छे. ए नियमने अनुसारे पांचे तत्त्वो द्वारा वर्षमां थवावालुं शुभाशुभ फल पण जाणी शके छे. ते जाणवानी रीति नीचे मुजब छे.

जे वखते मेषनी संक्रांति लागे ते वखते श्वासने रोकीने स्वरमां कयुं तत्त्व चाले छे ते जोवुं जोइए. जो

चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्व चालतुं होय तो जाणी लेवुं के जमानो बहुज श्रेष्ठ थशे अर्थात् राजा अने प्रजा सुखी रहेशे, पशुउने माटे घास विगेरे घणुं थशे तथा रोग अने जय विगेरेनी शांति रहेशे इत्यादि.

जो ते वखते चंद्रस्वरमां जल तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के वरसाद बहु थशे, पृथ्वी उपर अन्न घणुं थशे, प्रजा सुखी रहेशे, राजा अने प्रजा धर्मना मार्गे चालशे, पुण्य दान धर्मनी वृद्धि थशे, सर्व प्रकारे सुखसंपत्ति वधशे इत्यादि.

जो ते वखते सूर्यस्वरमां पृथ्वी अने जल तत्त्व चालतां होय तो जाणी लेवुं के कांइक उंबुं फल थशे.

जो ते वखते बंने स्वरोमांथी गमे ते स्वरमां अग्नि तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के वरसाद कमती थशे, रोग पीडा अधिक थशे, दुर्भिक्ष थशे, देश उजड थशे तथा प्रजा दुःखी थशे इत्यादि.

जो ते वखते गमे ते स्वरमां वायु तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के राज्यमां कांइक विग्रह थशे, वरसाद थोडो थशे, जमानो साधारण

थशे तथा पशुओने माटे घासचारो पण थोडो थशे इत्यादि.

जो ते वखते आकाश तत्त्व चालतुं होय तो जाणी लेवुं के बहु भारी दुर्भिक्ष थशे तथा पशुओ माटे घास आदि कांइ पण नहीं थाय इत्यादि.

वर्षफलने जाणवानी बीजी रीति.

जो चैत्र सुदि पडवाने दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्व चालतुं होय तो ए फल जाणवुं के वरसाद बहु थशे, जमानो श्रेष्ठ थशे, राजा अने प्रजामां सुखसंचार थशे

तथा कोइ प्रकारनो नय के उत्पात आ वर्षमां नहीं थाय इत्यादि.

जो ते दिवसे प्रातःकाले चंद्र-स्वरमां जल तत्त्व चालतुं होय तो ए फल जाणवुं के आ वर्ष अति श्रेष्ठ छे अर्थात् आ वर्षमां वरसाद, अन्न अने धर्मनी अतिशय वृद्धि थशे तथा सर्व प्रकारे आनंद रहेशे इत्यादि.

जो ते दिवसे प्रातःकाले सूर्य-स्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चालतुं होय तो मध्यम फल जाणवुं.

जो ते दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वरमां के सूर्यस्वरमां अग्नि, वायु अने आकाश ए त्रण तत्त्व चालतां होय तो तेनुं फल आ प्रमाणे समजी लेवुं के पूर्वे मेष संक्रांतिना विषयमां लखाइ गयेलुं छे ते प्रमाणे जो सूर्यस्वरमां अग्नि तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के प्रजामां रोग अने शोक थशे, दुर्भिक्ष पडशे तथा राजाना चित्तने आनंद नहीं रहे इत्यादि. जो सूर्यस्वरमां वायु तत्त्व चालतुं होय तो समजवुं के राज्यमां कांइक विग्रह थशे अने वृष्टि थोडी

थशे तथा जो सूर्यस्वरमां सुख-
मना चाले तो जाणवुं के पोतानुं मृ-
त्यु थशे अने छत्रभंग थशे तथा
कोइ कोइ ठेकाणे थोडुं अन्न अने
घास थशे अने काइ कोइ ठेका-
णे बिलकुल नहीं थाय इत्यादि.

वर्षफल जाणवानी त्रीजी रीति.

जो माघ सुदि सातम अथवा
अक्षय तृतीयाना प्रातःकाले चंद्र-
स्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चाल-
तुं होय तो अगाउ कह्या मुजब
श्रेष्ठ फल छे एम जाणी लेवुं.

जो ते दिने प्रातःकाले अग्नि आदि त्रण तत्त्व चालतां होय तो पूर्वे कह्या मुजब निकृष्ट फल छे एम जाणी लेवुं.

जो ते दिने प्रातःकाले सूर्यस्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चालतुं होय तो साधारण फल जाणी लेवुं.

जो ते दिने प्रातःकाले शेष त्रण तत्त्व (अग्नि, वायु अने आ-काश) चालतां होय तो तेनुं फल पण पूर्वे कह्या मुजब समजी लेवुं.

पांच तत्त्वोमां प्रश्नो विचार.

जो चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्व के जल तत्त्व चालतुं होय अने ते समये जो कोइ कांइ पण कार्यने माटे प्रश्न करे तो कहेवुं के अवश्य कार्य सिद्ध थशे.

जो चंद्रस्वरमां अग्नि, वायु के आकाश तत्त्व चालतुं होय अने ते वखते कोइ पण माणस कांइ कार्यने लीधे प्रश्न करे तो कहेवुं के कार्य कोइ पण प्रकारे सिद्ध नहीं थाय.

याद राखवानुं एटलुं छे के चं-द्रस्वरमां जल तत्त्व अने पृथ्वी तत्त्व स्थिर कार्यने माटे सारां छे, परंतु चर कार्यने माटे सारां नथी. तथा वायु, अग्नि अने आकाश ए त्रण तत्त्व चर कार्यने माटे सारां छे, परंतु ते पण सूर्यस्वरमां सारां छे, पण चंद्रस्वरमां सारां नथी.

जो कोइ पुरुष आवीने रोगीने विषे प्रश्न करे तथा ते समये चंद्रस्व-रमां पृथ्वी तत्त्व के जल तत्त्व चालतुं होय अने प्रश्न पूछवावालो पण

चंद्रस्वरनी (डाबी)बाजुए बेठेल होय तो कहेवुं के रोगी नहीं मरे.

जो चंद्रस्वर बंध होय एटले सूर्य-स्वर चालतो होय अने प्रश्न कर-वावालो डाबी बाजु बेठो होय तो कहेवुं के कोइ पण प्रकारे रोगी नहीं जीवे.

जो कोइ पुरुष खाली दिशामां (जे दिशानो स्वर चालतो होय ते दिशा छोडीने बीजी कोइ दि-शामां) आवीने प्रश्न करे तो क-हेवुं के रोगी नहीं बचे, पण जो खाली दिशाथी आवीने भरी दि-

शामां(जे दिशानो स्वर चालतो होय ते दिशामां) बेसीने प्रश्न करे तो कहेवुं के रोगीने सारुं थइ जशे.

जो प्रश्न करती वखते चंद्रस्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के रोगीना शरीरमां एक रोग छे. तथा जो प्रश्न करवाना वखते चंद्रस्वरमां अग्नि तत्त्व आदि कोइ तत्त्व चालतुं होय तो कहेवुं के रोगीना शरीरमां केटलाक रोग मिश्रित छे.

जो प्रश्न करती वखते सूर्यस्वरमां अग्नि, वायु के आकाश तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के रोगीना शरीरमां

एक रोग छे, पण जो प्रश्न करती वखते सूर्यस्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के रोगीना शरीरमां केटलाक मिश्रित रोग छे.

याद राखवानुं -के वायु अने पित्तनो स्वामी सूर्य छे, कफनो स्वामी चंद्र छे तथा सन्निपातनो स्वामी सुखमना छे.

जो कोइ पुरुष चालता स्वरनी तरफथी आवीने चालता स्वरनी बाजुए उभो रहीने के बेसीने प्रश्न करे तो कहेवुं के तमारुं काम अवश्य सिद्ध थशे.

जो कोइ पुरुष खाली स्वरनी तरफथी आवीने खाली स्वरनी बाजुए उभो रहीने के बेसीने प्रश्न करे तो कहेवुं के तमारुं कोइ पण काम सिद्ध नहीं थाय.

जो कोइ पुरुष खाली स्वरनी तरफथी आवीने चालता स्वरनी बाजुए उभो रहीने के बेसीने प्रश्न करे तो कहेवुं के तमारुं काम निः-संदेह सिद्ध थशे.

जो कोइ पुरुष चालता स्वरनी तरफथी आवीने खाली स्वरनी बा-जुए उभो रहीने के बेसीने प्रश्न

करे तो कहेवुं के तमारुं काम सिद्ध नहीं थाय.

जो गुरुवारे वायु तत्त्व, शनिवारे आकाश तत्त्व, बुधवारे पृथ्वी तत्त्व, सोमवारे जल तत्त्व तथा शुक्रवारे अग्नि तत्त्व प्रातःकालमां चाले तो जाणी लेवुं के शरीरमां कोइ पहेलांनो रोग छे ते अवश्य मटशे.

आपणुं शरीर, कुटुंब अने धन आदिकना विचारनी रीति.

जो चैत्र सुदि पडवाने दिवसे प्रा-

तःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणवुं के त्रण महीनामां हृदयमां बहु चिंता अने क्लेश उत्पन्न थशे.

जो चैत्र सुदि बीजने दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणी लेवुं के परदेशमां जवुं पडशे अने त्यां अधिक दुःख भोगववुं पडशे.

जो चैत्र सुदि त्रीजने दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणवुं के शरीरमां गरमी, पिं-

त्तज्वर तथा रक्तविकार आदि-
कनो रोग थशे.

जो चैत्र सुदि चोथने दिवसे
प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो हो-
य तो जाणवुं के नव महीनामां मृ-
त्यु थशे.

जो चैत्र सुदि पांचमने दिवसे
प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो
होय तो जाणी लेवुं के राज्यथी
कोइ प्रकारनी तकलीफ तथा इंग्नी
प्राप्ति थशे.

जा चैत्र सुदि छठने दिवसे
प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो हो-

य तो जाणवुं के आ वर्षमां जाइनुं मृत्यु थशे.

जो चैत्र सुदि सातमने रोज प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणवुं के आ वर्षमां पोतानी स्त्री मरी जशे.

जो चैत्र सुदि आठमने दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणवुं के आ वर्षमां कष्ट तथा पीमा अधिक थशे अर्थात् जाग्य-योगेज सुखनी प्राप्ति थाय इत्यादि.

ए सिवाय जो उपर कहेल दि-वसोमां प्रातःकाले चंद्रस्वरमां पृथ्वी

तत्त्व अने जल तत्त्व आदि शुभ तत्त्व चालतां होय तो बीजुं पण श्रेष्ठ फल जाणी लेवुं.

स्वरो द्वारा परदेशगमननो विचार.

जे पुरुष चंद्रस्वरमां दक्षिण अने पश्चिम दिशामां परदेश जाय ते परदेशथी पाछो आवीने पोताना घरमां सुख भोगवे छे.

सूर्यस्वरमां पूर्व अने उत्तर दिशा तरफ परदेश जवुं ते शुभकारी छे.

चंद्रस्वरमां पूर्व अने उत्तर दिशा तरफ परदेश जवुं ते ठीक नथी.

सूर्यस्वरमां दक्षिण अने पश्चिम दिशा तरफ परदेश जवुं ते ठीक नथी.

ऊर्ध्व दिशा चंद्रस्वरनी छे, ते माटे चंद्रस्वरमां पर्वत आदि ऊर्ध्व दिशामां जवुं सारुं छे.

पृथ्वीनी नीचेना भागनो स्वामी सूर्य छे, ते माटे सूर्यस्वरमां पृथ्वीनी नीचेना भागमां जवुं सारुं छे, परंतु सुखमना स्वरमां त्यां जवुं ठीक नथी.

परदेशमां रहेल मनुष्यना विषयमां प्रश्न–विचार.

प्रश्न करती वखते जो स्वरमां जल तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के ते (परदेशमां गयेल माणस) सर्व कार्यो सिद्ध करीने तुरत आवशे.

जो प्रश्न करती वखते स्वरमां पृथ्वी तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के ते (परदेशमां गयेल माणस) ठेकाणे बेठेल छे अने तेने कोइ वातनी चिंता नथी.

जो प्रश्न करती वखते वायु तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के ते (परदेशमां गयेल माणस) ते स्थलेथी बीजे स्थले गयो छे अने तेना हृदयमां चिंता उत्पन्न थइ रही छे.

जो प्रश्न करती वखते अग्नि तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के तेना (परदेश गयेल माणसना) शरीरमां रोग छे.

जो प्रश्न करती वखते स्वरमां आकाश तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के ते (परदेश गयेल) पुरुष मरी गयो.

स्वरो द्वारा गर्भ संबंधी प्रश्न-विचार.

जो चंद्रस्वर चालतो होय तथा ते बाजुथी आवीने कोइ प्रश्न करे के गर्भवती. स्त्रीने पुत्र थशे के पुत्री थशे तो कहेवुं के पुत्री थशे.

जो सूर्यस्वर चालतो होय ने ते बाजुथी आवीने कोइ प्रश्न करे के गर्भवती स्त्रीने पुत्र थशे के पुत्री थशे तो कहेवुं के पुत्र थशे.

जो सुखमना स्वर चालती वखते कोइ आवीने प्रश्न करे के गर्भवती

स्त्रीने पुत्र थशे के पुत्री थशे तो कहेवुं के नपुंसक जन्मशे.

जो आपणो सूर्यस्वर चालतो होय तथा ते बाजुथी आवीने कोइ गर्भ विषे प्रश्न करे अने प्रश्न करनारनो चंद्रस्वर चालतो होय तो कहेवुं के पुत्र थशे, पण ते जीवशे नहीं.

जो आपणो तथा प्रश्न करनार ए बंनेनो सूर्यस्वर चालतो होय तो कहेवुं के पुत्र जन्मशे अने ते चिरंजीवी थशे.

जो आपणो चंद्रस्वर चालतो होय अने प्रश्न करनारनो सूर्यस्वर

चालतो होय तो कहेवुं के पुत्री थशे, पण ते जीवशे नहीं.

जो बन्नेनो (आपणो अने प्रश्न करनारनो) चंद्रस्वर चालतो होय तो कहेवुं के पुत्री थशे तथा ते दीर्घायुषी थशे.

जो सूर्यस्वरमां पृथ्वी तत्त्वमां तथा ते दिनने माटे कोइ गर्भ संबंधी प्रश्न होय तो कहेवुं के पुत्र थशे तथा ते रूपवान्, राज्यवान् अने सुखी थशे.

जो सूर्यस्वरमां जल तत्त्व चालतुं होय अने तेमां कोइ गर्भ

संबंधी प्रश्न करे तो कहेवुं के पुत्र थशे तथा ते सुखी, धनवान् अने ब रसनो भोक्ता थशे.

जो गर्भ संबंधी प्रश्न करती वखते चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्व अने जल तत्त्व चालतां होय तो कहेवुं के पुत्री थशे तथा ते उपर लख्यां लक्षणोवाली थशे.

जो गर्भ संबंधी प्रश्न करती वखते चंद्रस्वरमां अग्नि तत्त्व चालतुं होय तो कहेवुं के गर्भ पडी जशे तथा जो संतति थशे तो ते जीवशे नहीं.

जो गर्भ संबंधी प्रश्न करती वखते चंद्रस्वरमां वायु तत्त्व चालतुं होय तो कहेवुं के कां तो पिंडा-कृति थशे अथवा गर्भ गळी जशे.

जो गर्भ संबंधी प्रश्न करती वखते सूर्यस्वरमां आकाश तत्त्व चालतुं होय तो नपुंसकना तथा चंद्रस्वरमां आकाश तत्त्व चालतुं होय तो वंध्या जेवी पुत्रीनी उत्पत्ति कहेवी.

जो कोइ सुखमना स्वरमां गर्भनो प्रश्न करे तो कहेवुं के बे दीकरी जन्मशे.

जो कोइ बन्ने स्वर चालती वखते गर्भविषयक प्रश्न करे तथा ते समये जो चंद्रस्वर तेज चालतो होय तो कही देवुं के बे कन्या थशे तथा जो सूर्यस्वर तेज चालतो होय तो कही देवुं के बे पुत्र थशे.

बीजा आवश्यक विषयोनो विचार.

कोइ ठेकाणे जवानी वखते अथवा उंघमांथी उठीने बीछानाथी नीचे पग मूकती वखते जो चंद्रस्वर चालतो होय तथा चंद्रमानोज

वार होय तो पहेलां चार पगलां डाबी बाजुथी चालवुं जोइए.

जो सूर्यनो वार होय तथा सूर्यस्वर चालतो होय तो चालती वखते प्रथम त्रण पगलां दक्षिण पगथी चालवुं.

जे मनुष्य तत्त्वनी ओलखाण करी पोतानां सर्व काम करशे तेनां सर्व काम अवश्य सिद्ध थशे.

पश्चिम दिशा जल तत्त्वरूप छे, दक्षिण दिशा पृथ्वी तत्त्वरूप छे, उत्तर दिशा अग्नि तत्त्वरूप छे, पूर्व दिशा वायु तत्त्वरूप छे तथा आकाशनी स्थिर दिशा छे.

जय, तुष्टि, पुष्टि, रति, खेलवुं कुदवुं अने हास्य ए छ अवस्था चंद्रस्वरनी छे.

ज्वर, निद्रा, परिश्रम अने कंपन ए चार अवस्था ज्यारे चंद्रस्वरमां वायु तत्त्व तथा अग्नि तत्त्व चालतां होय ते समये शरीरमां होय छे.

ज्यारे चंद्रस्वरमां आकाश तत्त्व चाले छे त्यारे आयुष्यनो क्षय तथा मृत्यु थाय छे.

पांचे तत्त्वना मलवाथी चंद्रस्वरनी उपर जणावेली बार अवस्था थाय छे.

जो पृथ्वी तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के पूछनारना मनमां मूलनी चिंता छे.

जो जल तत्त्व अने वायु तत्त्व चालतां होय तो जाणवुं के पूछनारना मनमां जीव संबंधी चिंता छे.

अग्नि तत्त्वमां धातुनी चिंता जाणवी.

आकाश तत्त्वमां शुभ कामनी चिंता जाणवी.

पृथ्वी तत्त्वमां बहु पगवालानी चिंता जाणवी.

जल अने वायु तत्त्वमां बे पगवालानी चिंता जाणवी.

अग्नि तत्त्वमां चार पगवालानी चिंता जाणवी.

आकाश तत्त्वमां पग विनाना पदार्थनी चिंता जाणवी.

रवि, राहु, मंगल अने शनि ए चार सूर्यस्वरनां पांचे तत्त्वना स्वामी छे.

चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्वनो स्वामी बुध, जल तत्त्वनो स्वामी चंद्र, अग्नि तत्त्वनो स्वामी शुक्र अने वायु तत्त्वनो स्वामी गुरु छे. ए वास्ते पोतपोताना तत्त्वमां ए ग्रह अथवा वार शुभ फलदायक थाय छे.

पृथ्वी आदि चारे तत्त्वमां अनु-

क्रमे मीठो, कषायेलो, खारो अने खाटो ए चार रस छे. ए वास्ते जे वखते जे रसनी खावानी इच्छा थाय ते वखते ते तत्त्व चाले छे एम समजवुं.

अग्नि तत्त्वमां क्रोध, वायु तत्त्वमां इच्छा तथा जल अने पृथ्वी तत्त्वमां क्षमा अने नम्रता आदि यतिधर्मरूप दश गुण उत्पन्न थाय छे.

श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, उत्तराषाढा, अभिजित, ज्येष्ठा अने अनुराधा ए सात नक्षत्र पृथ्वी तत्त्वनां छे तथा शुभ फलदायी छे.

मूल, उत्तराभाद्रपद, रेवती, आ-

र्द्रा, पूर्वाषाढा, शतभिषा अने आ-
श्लेषा ए सात नक्षत्र जल तत्त्वनां छे.

ए चौद नक्षत्रो स्थिर कार्यमां पोतपोताना तत्त्वना चालता सम-यमां जाणवां.

मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्र-पद, स्वाती, कृतिका, भरणी अने पुष्य ए सात नक्षत्र अग्नि तत्त्वनां छे.

हस्त, विशाखा, मृगशिर, पुन-र्वसु, चित्रा, उत्तराफाल्गुनी अने अ-श्विनी ए सात नक्षत्र वायु तत्त्वनां छे.

प्रथम आकाश, तेनी पाछल वायु, तेनी पाछल अग्नि, तेनी

पाछल पाणी, तेनी पाछल पृथ्वी ए क्रमथी एक एक तत्त्व एकेकनी पाछल चाले छे.

पृथ्वी तत्त्वनो आधार गुदा, जल तत्त्वनो आधार लिंग, अग्नि तत्त्वनो आधार नेत्र, वायु तत्त्वनो आधार नाक तथा आकाश तत्त्वनो आधार कान छे.

जो सूर्यस्वरमां भोजन करे तथा चंद्रस्वरमां जल पीए अने डाबी बाजु सुवे तो रोग कदि न थाय.

जो चंद्रस्वरमां भोजन करे अने

सूर्यस्वरमां जल पीए तो तेना शरी-
रमां अवश्य रोग थाय.

चंद्रस्वरमां शौचने माटे (दि-
शाने माटे) जवुं जोइए, सूर्य-
स्वरमां पेशाब करवो जोइए तथा
सुवुं जोइए.

जो कोइ पुरुष स्वरोनो एवो
अभ्यास राखे के तेने चंद्रस्वरमां
दिवसनो उदय होय तथा सूर्य-
स्वरमां रात्रिनो उदय होय तो ते
पूरी अवस्था जोगवे छे, परंतु जो
एथी विपरीत होय तो जाणवुं के
मोत नजीक छे.

अढी अढी घमी सुधी बंने (सूर्य अने चंद्र) स्वर चाले छे अने तेर श्वास सुधी सुखमना चाले छे.

जो आठ पहोर सुधी (२४ कलाक सुधी) सूर्यस्वरमां वायु तत्वज चालतो रहे तो त्रण वर्षनुं आयुष्य जाणवुं.

जो सोल पहोर सुधी सूर्य स्वरज चालतो रहे (चंद्रस्वर आवेज नहीं) तो बे वर्षमां मृत्यु जाणवुं.

जो त्रण दिवस सुधी एकलो सूर्यस्वरज चालतो रहे तो एक वर्षमां मृत्यु जाणवुं.

जो सोळ दिवस सुधी बराबर सूर्यस्वरज चालतो रहे तो एक महीनामां मृत्यु जाणवुं.

जो एक महीना सुधी सूर्य-स्वर हमेशां चालतो रहे तो बे दिव-सनुं आयुष्य जाणवुं.

जो सूर्य, चंद्र अने सुखमना ए त्रणे स्वर न चाले अर्थात् मोढेथी श्वास लेवो पडे तो चार घडीमां मृत्यु जाणवुं.

जो आखो दिवस चंद्रस्वर चाले अने आखी रात सूर्यस्वर चाले तो मोटुं आयुष्य जाणवुं.

जो आखो दिवस सूर्यस्वर अने आखी रात बराबर चंद्रस्वर चाले तो छ महीनानुं आयुष्य जाणवुं.

जो चार, आठ, बार, सोल अथवा वीश दिवस रात बराबर चंद्रस्वर चालतो रहे तो मोटुं आयुष्य जाणवुं.

जो त्रण रातदिवस सुधी सुखमना स्वर चालतो रहे तो एक वर्षनुं आयुष्य जाणवुं.

जो चार दिवस सुधी बराबर सुखमना स्वर चालतो रहे तो छ महीनानुं आयुष्य जाणवुं.